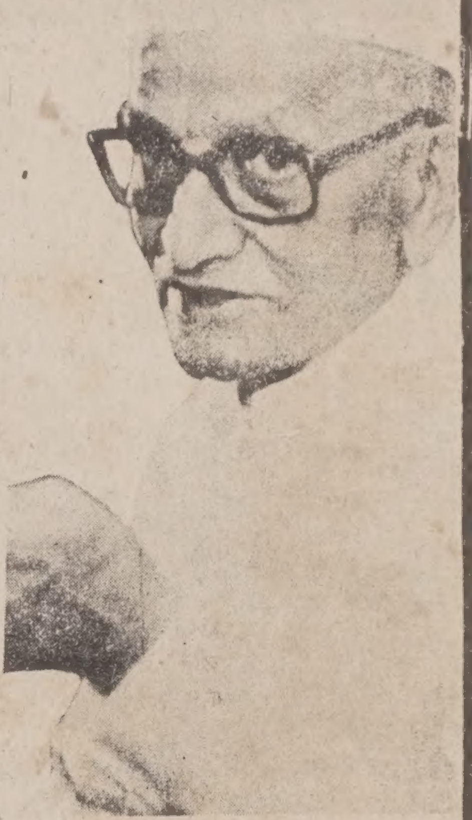
प्रेम पत्र

पूज्य मोरार जी भाई देसाई

सादर प्रणाम !



आपको मालूम है कि मैंने सदा आपकी इज्जत की है और जब आप प्रधान मंत्री के पद पर चुने गये तब मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ।

आप करोड़ों भारतवासियों की वोटों से चुने गये तथा आप और आपकी पार्टी ने गांधी समाधी पर जाकर शपथ ली कि आप सदा बापू के बताये हुये सच्चे रास्ते पर चलेंगे। इससे जनता के मन में बहुत आशायें बंध गईं। उन्होंने सोचा कि आपके नेतृत्व में जल्दी ही राम राज्य की स्थापना हो जायेगी। कुछ लोगों का ख्याल यह भी था कि चूंकि आप शराब नहीं पीते हैं इसलिये आपके मिनिस्टर भी नहीं पीयेंगे। और आप जनता की पीने की आदत भी धीरे-धीरे छुड़ा देंगे।

मुझे बहुत अफसोस है कि आपके कुछ मिनिस्टर शराब पीते हुये पाये गये और कुछ के घर से बोतलें निकलीं। इस पर भी जनता ने नशाबन्दी की आशा नहीं छोड़ी। परन्तु आज राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के शहीदी दिवस पर राजधानी के सारे शराब के ठेके खोले गये और जनता ने रात तक गले में शराब की बोतलें उंडेलीं। इन्दिरा सरकार के जमाने में ऐसा कभी नहीं हुआ।

क्या इससे यह समझना चाहिये कि आप जनता पार्टी के दावेदारों से डरकर नशाबन्दी कराने के इरादे में ढीले पड़ गये हैं? यदि आप भारत वर्ष को केवल एक-मात्र ऐसा देश बना पाते जिसमें पूर्ण नशाबन्दी होती तो यकीनन दुनिया में आपका और आपके देश का नाम बहुत ऊंचा हो जाता।

आपकी सेवा में यह सुझाव रखना चाहता हूं कि कम-से-कम मिनिस्टरों के लिये एक फार्म बनवादें जिस पर वे अपने दस्तखत करके भेजें और उस पर लिखा हो "आज मैंने नहीं पी"।

आपका

चितली

मुख्य पृष्ठ पर

भूले से मोहब्बत कर बैठा
नादान बेचारा दिल ही तो था
खुले आम औरों से मिलना
शादी से पहले, मैं ही तो था
बन्धन में बंधा जब से इसके
गुजरते हैं दिन भी रुक रुक के
मिलना हो किसी महबूबा से
जाना पड़ता है छुप छुप के



दीवाना

अंक : ६, ६ फरवरी से १५ फरवरी १६७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका:, मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा ; शंकर ; भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे की दरें
छमाही : २५ रु०
वार्षिक : ४८ रु०
द्विवार्षिक : ६५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना के लिये पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

काका के कारतूस

प्रश्न दीवाना के दीवानों के उत्तर काका हाथरसी के



प्रेमसुख चोपड़ा, बीकानेर (राज०)

प्र० : जब किसी को मौत बुलाती है, तब वह क्या करता है ?

उ० : हैंड बैग लेकर चले, बनकर अप्टूडेट।
चढ़े ट्रेन में टिकिट ले, निकल जायँ फिश प्लेट ॥

महेश कुमार भाटिया, अहमदाबाद

प्र० : आप दाढ़ी-मूंछ क्यों रखते हैं, काका जी ?

उ० : बन जाए पर्सनेलटी, हो समाज में पूछ।
रखते हैं इस वास्ते, काका दाढ़ी-मूंछ ॥

शकील हैदर, गार्डन रीच, कलकत्ता

प्र० : काका जी, बुढ़ापे में क्या अनुभव होता है ?

उ० : शबाब ऐसा गया हाथ से कि फिर न मिला।
उसीको ढूंढ़ रहा हूं कमर झुकाए हुए ॥

बाबू सिंह ठाकुर, बंगलौर

प्र० : इमरजेंसी में जो पत्रकार इन्दिरा जी की प्रशंसा करते थे, आज निन्दा के लेख क्यों छाप रहे है ?

उ० : कहते थे 'प्रियदर्शनी' सब, जबकि वह कुर्सी पे थी,
अब उसे वे कह रहे हैं, 'डोकरी' हम क्या करें !

सुरेशचन्द्र शर्मा निशांत, जबलपुर

प्र० : काका, अपनी सफलता देखकर आप क्या सोचते हैं ?

उ० : विनती करते हैं यही, हे प्रभु जगदाधार।
पुनर्जन्म में हम बनें, 'काका' बारंबार ॥

जयजीत सिंह राणा, गुलशन राणा, दिल्ली

प्र० : काका जी, आपसे हम पत्र-मित्रता कर सकते हैं क्या ?

उ० : राणों से कर मित्रता, कौन बढ़ाए रार।
होय सुहागिन सुन्दरी, करें पत्र-व्यवहार ॥

चतुर्भुज साहू, जबलपुर

प्र० : साठ साल के बाद में, सठिया जाते लोग।
फिर सत्ता के वास्ते, क्यों करते उद्योग ?

उ० : राजनीति मत छोड़िए, जब लौं घट में प्रान।
कबहू दीन दयाल के भनक परेगी कान ॥

लालबहादुर प्रधान, दुलियाजान (डिब्रूगढ़)

प्र० : एक लड़की को मैं बहन मानता हूं, मेरा मित्र उसे वासना की दृष्टि से क्यों देखता है ?

उ० : जैसी जिसकी कामना, होइ भावना व्याप्त।
जैसे जिसके कर्म हैं, वैसा फल हो प्राप्त ॥

खालिद इकबाल, सहारनपुर

प्र० : आजकल के आशिक, मजनूं की तरह जंगलों में क्यों भटकते ?

उ० : आधुनिक लैलाएं, मिल जातीं कालिज में।
फिर क्यों पड़ें मजनूं जी, जंगल की किच-किच में ॥

राजेश कुमार गुप्ता, तिनसुकिया (असम)

प्र० : सुना है, आपके पड़ोसी आपकी कविताएं सुनते-सुनते बोर हो गए हैं ?

उ० : कविता सुनकर मुफ्त की, हो जाते हैं बोर।
मगर खरीदें टिकिट तो, चिल्लाएं 'वन मोर' ॥

आशा रानी पहाड़गंज, दिल्ली

प्र० : यदि कोई पति बात-बात पर पत्नी से झगड़ा करे तो



उ० : अक्ल ठीक हो जायगी, पिचक जायँगे गाल।
कुछ दिन को कर दीजिए, चूल्हे की हड़ताल ॥

रमेश कुकरेजा, इन्दौर

प्र० : बेलन का आविष्कार किसने किया काका ?

उ० : 'ढोल-गंवार-शूद्र-पशु-नारी, यह सब ताड़न के अधिकारी'
तुलसी की इस उक्ति का, करने को प्रतिकार।
नारी के द्वारा हुआ, बेलन-आविष्कार ॥

संदीप कुमार चुघ, लखनऊ

प्र० : चोर की दाढ़ी में तिनका; तो काका की दाढ़ी में…?

उ० : कई बार तो दे चुके, हम इसका उत्तरं।
पिछले 'दीवाना' पुनः देख लेउ मिस्टरं ॥

विकास कुमार तिनसुकिया (असम)

प्र० : पुरानी शमाँ पर भी नए परवाने क्यों जलते हैं ?

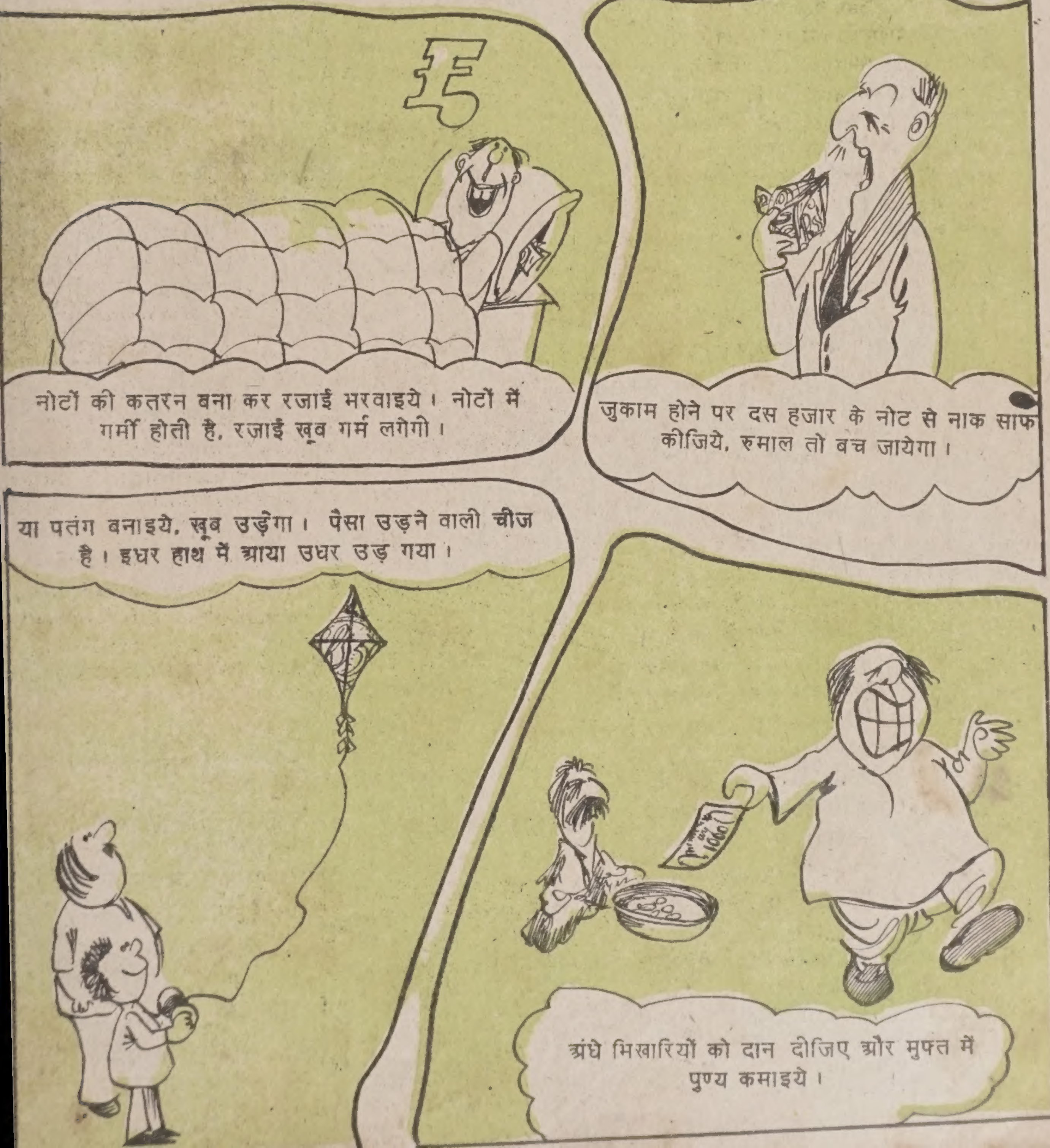
उ० : वैजयन्ती माला लगे, मम्मी-जैसी आज।
फिर भी लड़के फेंकते, सीटी की आवाज ॥

अपने प्रश्न 'केवल पोस्ट कार्ड पर' ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

रद्द हुये एक, पांच व दस हज़ार के नोटों का क्या करें?

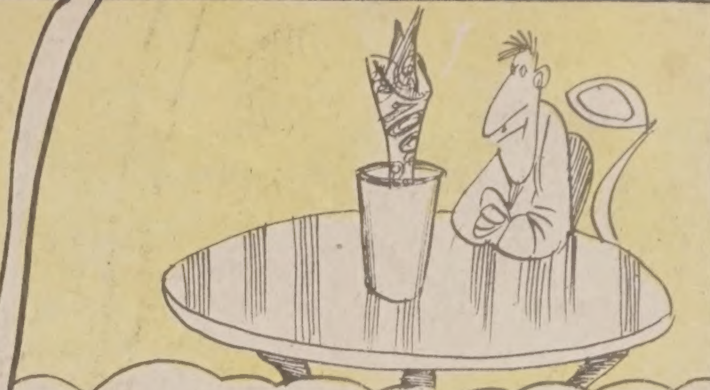
जन ब्लैकिये भाइयों के पास उपरोक्त नोट रह गये हैं वह चिन्ता न करें। हमारे रिसर्च विभाग ने इन रद्द हुए नोटों के कई उपयोग खोज निकाले हैं, इन्हें काम में लाइये–




चंदा
चंदे के बक्स में मोड़ कर डालिये। फिलहाल तो चन्दे मांगने वालों से पीछा छूटेगा।
बच्चों की किताबों पर इन नोटों की जिल्दें लगवाइये। बच्चे अपनी किताबों से प्रेम करने लगेंगे।
पार्टियों में इन नोटों की तिकोनी टोपी पहन पार्टी की शोभा बढ़ाई जा सकती है।
सिगरेट सुलगाने के काम लाइये, लोगों पर रौब पड़ेगा। किसी को क्या पता कि यह कौन सा नोट है।
मुन्नी की चोटी में रिबन के स्थान पर नोट बांधिये। सब नोट करेंगे।
या फ्रेम में सजा कर रखिये। अपने पिता जी की फोटो की जगह, क्योंकि पैसा असली बाप है।



बूढ़े भी इन नोटों की नाव बना कर स्नान का मजा दूना कर सकते हैं।



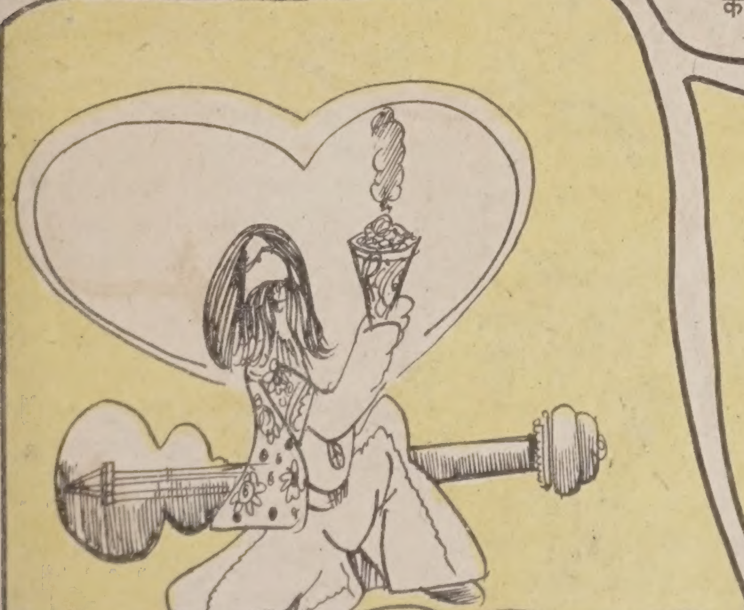
होटल वाले नेपकिन के स्थान पर यह नोट रख महंगे होटल होने का विशेष सार्थक कर सकते हैं। ग्राहक की भूख नोट देख कर तेज हो जायेगी। पैसा भूख जगाता है।



फिल्म डायरेक्टर बड़े नोट का भौंपू बना कर निर्देश दे सकता है। पैसा खुद भी तो बोलता है।



विवाह-मुंडन आदि पर रंग-बिरंगे कागजों की जगह इन नोटों की झंडियां व कतरनें अधिक शोभा देंगी। लोग भी कहेंगे कि अगले ने दिल खोल कर पैसा लुटाया है।



किसी हिप्पी भाई के पास गलती से ऐसा बड़ा नोट रह गया हो तो वह गांजे के लिये चिलम बना सकते हैं। गांजे के कश में पैसे का नशा मिल कर दुगना नशा होगा!



या इन नोटों से टायलेट पेपर का रोल करवाइये।

आपस की बातें

अपने प्र० आज ही भेजिये

प्रदीप चन्द्र जैन—कानपुर : आपने जीवन में कितनी बार दूसरों की भलाई का काम किया है ?

उ० : ऐसा काम तो बच्चा झमूरा सबसे अच्छा करता है। एक बार उसकी एक गर्ल फ्रेंड ने सोने की बालियां और रेशमी कपड़ों की फर्माइश की। इस फर्माइश पर एक बार तो बच्चा झमूरा सन्नाटे में आ गया, क्योंकि उसकी जेब में केवल पच्चीस रुपए थे। पर गर्ल फ्रेंड की भलाई का काम तो करना ही था। बच्चा झमूरा एक पेस्ट्री बनाने वाली बेकरी पर गया और मैनेजर को पच्चीस रुपए एडवांस देकर एक हजार पेस्ट्रियों का आर्डर दे दिया और कहा कि उसे पांच-पांच सौ के दो अलग-अलग पैकेटों में पैक करवा दें। मैनेजर ने एक घंटा बाद आने को कहा, बेकरी से निकल कर बच्चा झमूरा एक ज्वेलरी की दुकान पर आया और वहां से पांच सौ रुपए की बालियां लेकर बोला; 'अपना आदमी साथ भेज दीजिये', इन पांच सौ रुपये की पेमेन्ट बेकरी के मैनेजर साहब करेंगे। बालियां जेब में डालकर और ज्वेलर के आदमी को लेकर बच्चा झमूरा एक कपड़े की दुकान पर पहुंचा, वहां से पांच सौ रुपए के रेशमी कपड़े लिए और कहा अपना आदमी साथ भेज दीजिए। पांच सौ रुपये की पेमेन्ट बेकरी के मैनेजर साहब करेंगे। दोनों आदमियों को साथ लेकर अब बच्चा झमूरा फिर बेकरी पर पहुंचा और दोनों आदमियों को बाहर बैंच पर बिठाकर अन्दर चला गया। दो मिनट बाद ही वह बेकरी के मैनेजर को लेकर बाहर आया और दोनों आदमियों की ओर उंगली से इशारा करके ऊंची आवाज में बोला, इन दोनों को पांच-पांच सौ रुपये दे दीजिये। मैनेजर ने दोनों आदमियों से कहा, 'ठीक है।' आप जरा दो मिनट तशरीफ रखिये। दोनों आदमी जो जरा खड़े हुए थे, मैनेजर की बात सुनकर फिर बैठ गये। और बच्चा झमूरा जेब में बालियां और हाथों में कपड़े के पैकेट लिये आराम से अपनी गर्ल फ्रेंड के घर की ओर चल दिये, उसकी फर्माइश पूरी करने और उसका भला करने के लिए। दूसरी ओर दो-चार मिनट बाद ही बेकरी के मैनेजर ने दोनों आदमियों को पांच-पांच सौ पेस्ट्रियों के पैकेट थमाकर और एडवांस के पच्चीस काट कर बाकी सौ रु० मांगे तो तीनों के मुंह देखने वाले थे।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मुहम्मद अशरफ—नान्देड़ : चाचाजी, आप आगरा के पागलखाने से छूटे थे, या पूना के पागलखाने से ?

उ० : भगवान के मेहमानखाने से छूटे थे और दुनिया के पागलखाने में आए हैं।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

हेमेन्द्र मोहन बडोला—कोटद्वार : मुझे कहानी व कविता लिखने का बहुत शौक है, पर इस हीन भावना से दबा रहता हूं कि मेरी रचना किसी को पसन्द न आई तो...?

उ० : तो वह अपनी राधा को याद करेगा और दो रोटी अलग खा लेगा। आपका क्या छीन लेगा। जिन्हें महान लेखक बनना है, वे छोटी बातों की परवाह नहीं करते।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

विनोद पुरी रंजू—लुधियाना : दूसरे की हां में हां कब मिलानी चाहिए ?



उ० : जब दूसरे का मुक्का अपने मुंह के बिल्कुल पास आ जाए। आजकल यही दस्तूर है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

सोहन लाल—पानीपत : मैंने बहुत दिन पहले 'पेन फ्रेंड' के लिए फोटो भेजी थी, जो अब तक नहीं छपी। क्या आप बता सकते हैं कि फोटो छापने में कितने महीने लगते हैं ?

उ० : इस प्रश्न का उत्तर हम कम से कम बीस बार दे चुके हैं। हर आने वाली फोटो को हम ऐसे लाईन में लगा देते हैं, जैसे बस की क्यू में आदमी खड़े होते हैं। हर सप्ताह हम आगे से फोटो छापते रहेंगे और पीछे की लाईन ऐसे आगे बढ़ती रहती है जैसे कुछ सवारियां बस में चढ़ने पर सवारियों की लाईन आगे बढ़ती है। अपना नम्बर आने पर हर तस्वीर छप जाती है। आपकी तस्वीर लाईन में कहां लगी है, यह बताना कठिन है। आशा है हमारे सभी पाठक इस तरीके को अच्छी तरह समझ लेंगे।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

एस० सी० शर्मा—जबलपुर : यदि आपको कभी 'नोबल प्राईज' मिले तो ?

उ० : हम इस बात पर रो देंगे कि दुनिया ने इसे 'नोबल' समझने में इतनी देर क्यों लगाई ?

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

मो० इसराईल—एनास्लामपुर : क्या मैं दीवाना के हर कालम में भाग ले सकता हूं ?

उ० : जी हां, पर हर कालम में कोई फड़कता हुआ आईडिया लेकर।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

योगेश कुमार अग्रवाल—रुड़की : मेरी साली चिल्ली से विवाह करना चाहती है क्या वह विवाह के लिए राजी हो जाएगा ?

उ० : जी हां, पर उसकी एक शर्त है कि विवाह में उसे सब कुछ दिया जाए, बस साली ही न दी जाए।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

टी० एस० साहनी—बगीची पीरजी : क्या मैंने यह सच सुना है कि लल्लू धोबी के गधे से आपका भाई चारा है ?

उ० : जी नहीं, वह तो 'बेचारा' है। उसे तो घास भी नहीं मिलती चारे में। भाई-'चारा' तो हमारा तुम्हारे साथ है। कभी घास खाकर भी देखी है उसमें सबसे अधिक 'क्लोरोफिल' होता है।

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

डा० के० मटाई—इन्दौर : चाचा जी, आप डा० झटका से कहकर मेरे दांतों के लिए ऐसा मंजन भिजवा दीजिए जिससे मेरे दांत भी आप जैसे या चिल्ली जैसे हो जाएं ?

उ० : हमारे दांतों ने आपकी यह हालत कर दी है तो कहीं ऐसा न हो कि लोग आपके लिए कहें, 'कौआ चले हंस की चाल, तो अपनी चाल भी भूल गया। डाक्टर झटका आपकी आंखों के लिए 'बिनाका टूथ-पेस्ट और दांतों के लिए भीमसैनी काजल' भेज देंगे।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

फिल्मोत्सव क्यों मनायें ?

भारत हर वर्ष अपने किसी न किसी शहर में अन्तर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव मनाता है। इसका उद्देश्य क्या है ?



नई और पुरानी पीढ़ी के बीच

—सनम

'अरी ! इतनी बड़ी खुली किताब के आसन पर यों सिर उघाड़े क्यों बैठी है, कुछ तो बाप-दादों की इज्जत का ख्याल कर। भले घर की बहुओं को यह शोभा नहीं देता।' मेज के कोने पर पड़ी कलम ने खुली पुस्तक के मध्य पड़ी सुन्दर रंगीन पेंसिल से कहा।

'मां जी ! आप मुझे बात-बात पर टोका मत करें। मुझे पता है कि मेरे बाप-दादों की इज्जत किस बात में है और किस में नहीं।' बहूरानी पेंसिल ने तनिक रोष प्रकट करते हुए कहा।

'हे भगवान ! कैसा बुरा जमाना आ गया है ? हमने भी तो आखिर अपनी जवानी बिताई। अपने अन्दर भगवान झूठ न बुलाए, इतने-इतने गुण थे, पर ऊपर से लाज-शर्म इतनी कि कभी अपने चोले का रंग तक नहीं बदला। यह आजकल की छोकरियां तो गिरगिट की तरह नित-नए रंग बदलती हैं। न काम न धाम बस जरा-सी किताब पर मामूली निशान लगाये और सजी-संवरी आसन पर बैठी रहीं।'

पेंसिल रानी भी बातों में कुछ कम न थी। पहले तो गुस्से को पी गई किन्तु सास की निरन्तर कटु-आलोचना को देर तक नहीं सुन सकी और सफाई देते हुए बोली—'मां जी, उस समय विज्ञान ने इतनी उन्नति ही नहीं की थी कि आप नित-नए रंगों में आ सकतीं। हां, काम की आपने भली कही। लेकिन आप स्वयं ही जरा शान्ति से सोचकर देखिए, मैं आवश्यकतानुसार सब काम पूरा कर देती हूं। चाहे वह लिखने का हो, ड्राइंग का हो, शेड का हो या निशान लगाने का। अपना काम पूरा करने के बाद अगर मैं थोड़ी देर आराम करने के लिए बैठ जाऊं, तो मेरे विचार में आपको कोई एतराज नहीं होना चाहिए।'

'अरी चल री ! बड़ी आई अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने। तेरी जैसी हमने लाखों देख रखी हैं। अरी ? मैंने सारा जीवन लिख-लिखकर अपनी हड्डियां घिसवा दीं, सिर्फ परोपकार के लिए, लेकिन कभी चूं तक नहीं की। और अपने दाम थे ही कितने ? हर्र लगे न फिटकरी रंग चोखा। मेरे ही कारण पुराने समय में वे लोग वेदों, पुराणों के ज्ञाता बनते थे। तूने अगर जरा-सी सीधी-टेढ़ी लाइनें लगा दीं तो क्या कमाल कर दिया ?'

'मां जी ! मैंने अपनी बड़ाई तो नहीं की, सिर्फ सच्चाई आपके सामने रखी है।'

'तो इसका मतलब मैं झूठी हूं। अरी अक्ल की दुश्मन, जरा यह तो बता कि आज तक कवियों और लेखकों के विचारों को दुनिया तक मैंने ही पहुंचाया है या नहीं ? युद्धकाल में, शान्ति में मैंने जी भरकर समयानुसार जनता की सेवा की है। तभी विद्वानों ने मुझे तलवार से भी अधिक शक्तिशाली कहा है।'

'सो तो मां जी, आपकी जुबान ही इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।'

'अरी कलमुंही ! तुझे शर्म नहीं आती, मेरी जुबान को तलवार कहती है ? जरा सम्भलकर बोल।' कलम ने क्रोध से बहू पेंसिल को डांटा।

'मां जी, मैंने तो अपनी तरफ से कुछ नहीं कहा, सिर्फ आपकी ही तो बात को स्पष्ट किया है।'

'हां-हां बड़ी आई है, बड़ों की बातें स्पष्ट करने वाली। अरी मैं कहती हूं, फूट गए मेरे भाग, जो मुझे इन आंखों से कलयुग के यह कारनामे देखने पड़ रहे हैं। हे भगवान ! तूने मुझे यह देखने से पहले ही क्यों नहीं धरती से उठा लिया।' इतना कहते हुए कलम बुढ़िया जोर-जोर से रोने लगी।

आफिस बन्द होने का समय हो गया था। कुछ ही मिनटों बाद बॉलपैन कुमार जी दफ्तर से थके-मांदे लौटे। लेकिन मेज पर चढ़ते ही जो कुहराम मचते देखा कि सन्न रह गए। पेंसिल रानी की शान्ति और मां कलम का रोना-धोना सारा मामला समझ गए। पर फिर भी मां से कारण पूछने को विवश हो गए।

मां जी और भी जोर-जोर से रोते हुए बोलीं—'पैन बेटे ! अब रोज-रोज मुझ से यह जुल्म नहीं सहा जाता। अब तू मुझे किसी अंधेरी कोठरी में अपने हाथों से फेंक दे, ताकि मैं अपने शेष दिन यह जुल्म न देख सकूं।'

'आखिर मां जी हुआ क्या, कुछ तो बताइए ?'

'अरे बेटा ! तू रंग-बिरंगे पैंट-कोट पहन दिन भर दफ्तर में बैठा रहता है। तू मेरे दिल की क्या जानेगा ? तुझे क्या पता कि दिन भर मुझे झूठी, तलवार के समान जीभ वाली और न जाने क्या-क्या कहकर जलाया जाता है। तू मुझे और अपने बाप होल्डर को अलग कर दे। बुढ़ापे में भीख मांग-मांगकर गुजारा कर लेंगे।'

'मां जी, मैं सोचता हूं कि जिन्होंने कलयुग का अर्थ मशीनों का युग बताया है, वे मूर्ख हैं। अच्छा तो यही होता कि वे इस युग को कलह-युग कहते। दिन भर के थके-मांदे घर पहुंचो तो घर में महाभारत छिड़ा मिलता है और यही तो हमारी उन्नति के पथ का रोड़ा है।'

'अरे, मैंने जो अपना पेट काटकर तुझे पाला-पोसा, इतना जंटलमैन बनाया, सिर्फ इसलिए कि कोई सुन्दर सुलखनी बहू लाकर बुढ़ापा चैन से काट सकूं। पर हाय रे मेरे भाग, पहला गुण तो मिला पर दूसरा नाम को भी नहीं। भला मैं इसकी सुन्दरता को शहद लगाकर चाटूंगी, अगर यह दिन भर मेरा जी जलाती रहे।'

इतने में होल्डर लालाजी भी दुकान बन्द करके अपने पोते रबड़ को गोदी में उठाए घर पहुंचे। कलम की शिकायत बाहर से ही सुनकर समझ गए थे। अन्दर आकर उसकी सूजी आंखों ने उनके ज्योतिष को सही सिद्ध कर दिया, बड़े धीरज से बोले—'चल भई, पैन की जननी ! यह तो रोज का झंझट है। बुढ़ापे में अब राम भजन किया कर। जरा उठ, रोटी खिलवा, बड़ी भूख लग रही है। बाप-बेटा, पोता तीनों मिलकर खायेंगे।'

पास ही आंखें मूंदे अनिल भी यह सारा वार्तालाप सुन रहा था। पढ़ते-पढ़ते अचानक उसकी आंख लग गई थी। कलम का रोना-धोना सुन वह भी जाग गया था। पर इस सुसंवाद का मजा आंखें मूंदकर लेता रहा। पेंसिल तभी रसोई की ओर उठकर जाने ही वाली थी कि उसने एक अच्छे सलाहकार की भांति कहा—'पुरानी और नई पीढ़ी का विवाद सदा से ही चलता आया है और चलता रहेगा। इस बात को लेकर अपने जीवन को कलुषित बनाना बुद्धिमानी नहीं। अच्छा यह है कि दोनों पीढ़ियां आपस में शान्ति से समझौता कर लें।'

यह सुन बूढ़ी कलम झेंप गई, पेंसिल के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट आई और पैन तथा होल्डर के चेहरे भी इस सलाह पर अपनी पूरी सहमति प्रकट कर रहे थे। ●

धारावाहिक उपन्यास

खौफनाक आवाजें

लेखक :- कैप्टन युद्धवीर

भाग-८

उसने सुइयों को घुमाया और ग्यारह बज कर दस मिनट पर टिका दिया।

तभी कैमरे जैसी डिबिया में से भयानक और रहस्यमयी आवाज आई, 'मैं तुम सबको कत्ल कर डालूंगा! कोई नहीं बचेगा! तुम सबको कुत्तों की मौत मरना होगा!'

'ओ...ह! तो यह बात है! यही आवाजें सुन कर मुझे अचरज हुआ था।' राजीव बोला, 'मैं समझा था कि यह बड़बड़ाहट प्रोफेसर पांडे की थी।'

'नहीं; ये वाक्य इस डिबिया से गूंजते थे।' बलजीत ने कहा।

'यह डिबिया-सी कैसी है?' अनिला ने पूछा।

'इन सुइयों को देखो, जो ग्यारह बज कर दस मिनट पर स्थायी तौर पर फिक्स कर दी गई हैं। चौबीस घंटे बाद, यानि रात के ग्यारह बज कर दस मिनट पर इसमें से भयानक आवाजें निकलने लगती थीं। हो सकता है कि ये वाक्य पांच-पांच मिनट बाद अपने आप दुहराए जाते थे। राजीव, क्या तुम बता सकते हो कि प्रोफेसर के कमरे में तुमने भयानक आवाजें कब सुनी थीं?'

'मैं आपकी ही बात पर हैरान रहा हूं। मैंने ग्याहर बज कर दस मिनट पर ही आवाजें सुनी थीं।' राजीव ने बताया।

'मेरे विचार में प्रोफेसर को हत्यारा साबित करने के लिए ही यह यंत्र पलंग के पाये में लगाया गया था।' बलजीत बोला, 'अनिला, जब मैं केवलकृष्ण के बंगले की तलाशी ले रहा था तो तुमने पड़ोसियों की बात मुझे बताई थी। उनका कहना था कि केवलकृष्ण के बंगले से रात को भयानक आवाजें आया करती थीं, इसलिए लोग रात में उधर नहीं झांकते थे। आओ, उसका बंगला भी देख लें।'

फ्लैट से बाहर निकल कर बलजीत ने दरवाजे को ताला लगाया। इसके बाद कार में बैठ कर वे केवलकृष्ण के बंगले में आ पहुंचे।

सारा बंगला छान मारने पर भी उन्हें वैसा कोई यंत्र न मिला, जैसा प्रोफेसर पांडे के पलंग से मिला था। आखिर बलजीत ने यह सुझाव दिया, 'मेरे विचार में हमें बंगले के आसपास भी अच्छी तरह टोह लेना चाहिये।'

वे तीनों बंगले से बाहर निकल आए। पिछवाड़े की ओर पेड़ थे। पेड़ों की शाखाओं और तनों को देख कर बलजीत चौंक गया। उसे ऐसा लगा जैसे उन पेड़ों को वह पहले भी कभी देख चुका था। वहां उन्हें किसी तरह का यंत्र न मिला।

तभी अनिला बोल उठी, 'वो देखिये, वो! वो कोई पुरानी कब्र है!'

कब्र को देख कर बलजीत फिर से चौंका। उसने पेड़ों को देखा तो ऊपर के छतनार देख कर उसे सब कुछ याद आ गया। उसने तुरन्त जेब में हाथ डाल कर एक कागज और एक चाबी निकाली। चाबी और कागज उसे सरस्वती के लम्बे बक्सों में से मिले थे।

कागज खोल कर देखने के बाद वह बड़े उत्साह से बोला, 'इस कागज पर तो इसी जगह का नक्शा है! आओ, जरा इस कब्र को भी देख-परख लें।'

वे तीनों कब्र की ओर बढ़े।

जासूस बलजीत और उसके सहायक अनिला और राजीव ने देखा कि कब्र की कुछ ईंटें उखड़ी हुई थीं। कब्र के सिरहाने का आलेख-पत्थर ध्वंस गया था। उसके खाने में टूटे हुए दीये पड़े थे। कब्र के एक हिस्से में पत्थर का बना एक हाथ था जिसकी एक उंगली सामने वाले पत्थर की तरफ इशारा कर रही थी।

बलजीत ने उंगली के सामने वाले पत्थर को गहरी नजरों से देखना शुरू किया। वह कोई बहुत बड़ा पत्थर नहीं था।

बलजीत ने हाथ में पकड़े नक्शे को देखा और फिर कब्र, हाथ, उंगली, सामने पत्थर पर नजर डाली। उसके मुंह से निकला, 'मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि यह नक्शा इसी जगह का और इसी कब्र का है। शायद इस केस का असली सुराग इसी कब्र के साथ जुड़ा है।'

'अब?' राजीव ने पूछा।

बलजीत ने नक्शा लपेट कर अपनी जेब में रख लिया और कब्र के सिरहाने की तरफ चला आया। उसे कब्र की एक ईंट थोड़ी बाहर निकली हुई दिखाई दी। बलजीत ने वह ईंट दोनों हाथों में दबोच कर बाहर खींच ली।

अनिला और राजीव भी उसके पीछे आ खड़े हुए। जिस जगह से ईंट हटाई गई थी, उसे देख कर वे दोनों अचम्भे में रह गए। ईंट निकलने पर खाली रह गई जगह में वैसा ही कैमरे जैसा यंत्र रखा हुआ था, जैसा प्रोफेसर पांडे के पलंग के पाये में पाया गया था। उस यंत्र में घड़ी के साथ एक छोटा-सा एम्प्लीफायर भी लगा हुआ था।

अनिला के मुंह से निकला, 'रातों में यहां भयानक आवाजें सुनाई देने का राज इसी में छिपा है।'

'हां, अनिला!' बलजीत ने मुस्कराते हुए कहा, 'इस एम्प्लीफायर से रात के समय भयानक आवाजें दूर तक गूंजती होंगी। लोगों को डराने वाला यही यंत्र है। जानते हो इसे इस कब्र में क्यों लगाया गया?'

'आप बताइये!' राजीव ने कहा।

'रात के समय भयानक आवाजें पैदा करने का मनोरथ यह था कि डर के मारे कोई कब्र के पास न फटकने पाये। यहां घड़ी की सुइयां ग्यारह बज कर दस मिनट पर नहीं हैं।'

'हाँ, यहाँ तो सुइयां बारह बज कर अट्ठाइस मिनट पर खड़ी हैं। कोई आदमी रात को यहां बारह बजकर अट्ठाइस मिनट पर आता था।'

'किस लिए आता था ?' अनिला ने पूछा।

'यह हमें अभी मालूम करना है।' बलजीत बोला, 'यह पक्की बात है कि भयानक आवाजें पैदा करने का मतलब यह भी था कि उस दौरान कोई आदमी यहाँ आने वाले का पीछा न करे। अब हमें उंगली का इशारा समझना होगा कि पथरीला हाथ सामने वाले पत्थर की तरफ क्यों उठा है। आओ, उस पत्थर का भेद भी खोल डालें।'

तीनों जासूस उस पत्थर के पास आ गए।

बलजीत ने दोनों हाथ पत्थर पर टेक दिये और उसे खिसकाने को जोर लगाने लगा। राजीव उसकी मदद को आया तो बलजीत ने उसे रोक दिया, 'नहीं राजीव, तुम वहीं रहो।'

'क्यों ?'

'मैं यह देखना चाहता हूं कि इस पत्थर को एक ही आदमी इसकी जगह से हटा सकता है या नहीं।' यह कह कर बलजीत ने तुमक कर जोर लगाया। पत्थर अपनी जगह से हट कर अलग हो गया।

राजीव और अनिला की आँखें हैरानी के मारे फैल गई।

जिस जगह से पत्थर हटा था, वहाँ एक गढ़ा-सा बन गया था। वास्तव में वह किसी तहखाने का मुँह था। नीचे को जाती सीढ़ियां दिखाई दे रही थीं। बलजीत ने चेहरा झुका कर तहखाने की हवा सूंघी। उसे शक था कि अन्दर से कोई विषैली गैस न उठ रही हो। अन्दर से आ रही हवा में सीलन की बदबू जरूर थी, मगर विषैलापन नहीं था।

तहखाने में सबसे पहले बलजीत उतरा। उसके पीछे-पीछे राजीव और अनिला थे। बलजीत ने जेब से सिगरेट-लाइटर निकाल कर जलाया। नीचे का दृश्य देख कर वे भौंचक्के रह गए।

तहखाने में सामने की दीवार के आगे एक बहुत बड़ी पुरानी तिजोरी पड़ी थी। उसे बहुत बड़ा ताला लगा हुआ था। तिजोरी के पास एक लीपा-पोता हुआ चबूतरा था। चबूतरे पर दो रायफलें, दो तोड़ेदार बन्दूकें, तीन देसी पिस्तौल, पांच-छह खंजर, कुछ छुरियां और दो गंडासे पड़े थे।

अनिला ने पूछा, 'क्या यह किसी का शस्त्रागार है ?'

बलजीत ने कोई उत्तर न दिया। वह कुछ और ही सोच रहा था। उसकी नजरें तिजोरी पर लगे ताले पर टिकी हुई थीं। एकाएक वह मुस्करा दिया। उसने जेब में रखी वह बड़ी-सी चाबी निकाली, जो उसे सरस्वती के फ्लैट में रायफल के बक्से के पेंदे में से मिली थी। उसने सिगरेट-लाइटर राजीव को थमा दिया।

बलजीत ने आगे बढ़ कर तिजोरी के ताले में चाबी डाली और घुमा दी। ताला खुल गया। यह देख कर अनिला और राजीव की आँखों में चमक-सी भर गई।

तिजोरी का पट खोला गया। उसके तीन खाने थे। ऊपर के खाने में पुराने करेंसी नोटों की गड्डियां थीं और चांदी के रुपयों का ढेर था। दूसरे खाने में जेवरात थे। जेवर पुराने फैशन के थे और उनकी चमक धुंधली पड़ चुकी थी। तीसरे खाने में चाँदी के बर्तन और चाँदी की सिल्लियां थीं।

राजीव ने आश्चर्य से कहा, 'यह तो किसी राजा-महाराजा का खजाना मालूम होता है !'



'हथियारों, नोटों, जेवरों और चाँदी का यह भण्डार यहां क्यों छिपा कर रखा गया ?' अनिला ने पूछा।

बलजीत ने मुस्कराते हुए कहा, यह भण्डार ऐसा है जिसने इस हत्याकाण्ड पर से आधा पर्दा उठा दिया है।' यह कह कर उसने तिजोरी बन्द कर दी, 'अब तुम समझ ही गए होगे कि डरावनी आवाजें पैदा करके लोगों को इस बंगले में आने से किस लिए रोका जाता था।'

'इस खजाने को बचाने के लिए।'

'हां; आओ अब बाहर निकलें।'

तहखाने से बाहर निकल कर राजीव और बलजीत ने पत्थर से उसका रास्ता पहले की तरह ढांप दिया।

'अब हमें एक काम और करना है।' बलजीत ने कहा।

'कौन-सा काम ?' अनिला ने पूछा।

'अनिला ! क्या तुम्हें उस टैक्सी का नम्बर याद है जिसमें सरस्वती को गोली मारी गई ?'

'याद है। उसका नम्बर है—यू एल ७८७२।'

'अब हमें मालूम करना होगा कि यह टैक्सी किस स्टैंड की है। आओ, किसी ऐसे मकान की तलाश करें जिसमें फोन लगा हो।'

बलजीत के साथ अनिला और राजीव उस बंगले से बाहर निकले। दस-बारह मिनट की दौड़धूप के बाद उन्हें एक बंगले से फोन करने की सुविधा मिल गया। बलजीत ने इन्स्पेक्टर शर्मा को फोन पर कुछ बातें करने के बाद कहा, 'आप यू एल ७८७२ टैक्सी के बारे में यह पता लगा कर मुझे सूचित करें कि वह किस स्टैंड की है।'

'आपको क्या होटल के फोन पर सूचित करूं ?'

'हाँ, इन्स्पेक्टर साहब !' यह कह कर बलजीत ने रिसीवर क्रैडल पर रखा और कार में बैठ कर अपने साथियों के साथ होटल की तरफ रवाना हुआ।

अनिला, राजीव और बलजीत चाय पी रहे थे और ताजा घटनाओं पर अपने-अपने विचार पेश कर रहे थे।

तभी टैलीफोन की घंटी बज उठी।

बलजीत ने रिसीवर हाथ में लेकर कहा,

'हलो ! बलजीत बोल रहा हूं।'

'बलजीत बाबू ! मैं इन्स्पेक्टर शर्मा बोल रहा हूं। यू एल ७८७२ नम्बर की गाड़ी हैवलॉक रोड के टैक्सी स्टैंड की है। मैंने स्टैंड के इनचार्ज को फोन कर दिया है कि इस टैक्सी के ड्राइवर को रोके रखें। क्या मैं भी जान सकता हूं कि आपको उस टैक्सी-ड्राइवर की क्या जरूरत पड़ गई ?'

उससे कुछ पूछताछ करनी है। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया !' बलजीत ने इतना-सा जवाब देकर रिसीवर क्रैडल पर रख दिया।

टेलीफोन की घंटी फिर से बजने लगी।

बलजीत ने पलट कर दुबारा क्रैडल पर से रिसीवर उठा कर कहा, 'हलो !'

'बलजीत बाबू ! मैं रघुनन्दन बोल रहा हूं।'

'कहिये, आपने कैसे फोन किया ?'

सेठ रघुनन्दन की रुआंसी आवाज आई, 'बलजीत बाबू ! मेरी पत्नी अंजना को…'

'क्या हुआ आपकी पत्नी को ?'

'उसे कत्ल कर दिया गया।' सेठ फोन पर ही फूट कर रो पड़ा।

'यह कैसे हो गया ?'

'अंजना की लाश बरामदे में पड़ी है।'

'यह किसने किया ?'

'बलजीत बाबू ! अंजना हजरतगंज से शॉपिंग करके लौटी तो ऐसा लगता है कि बंगले के दायीं तरफ दीवार की ओट में छिपे बैरी ने खींच कर तीर मारा। तीर इस जोर का था कि छाती में गड़ा और पीठ-पीछे से निकल आया। शोफर ने यह सब देखा तो शोर मचा दिया। एक तीर शोफर पर भी छोड़ा गया था, मगर वह बच गया; तीर उसके बाजू में ही लगा।'

'क्या शोफर ने तीर चलाने वाले को नहीं देखा ?' बलजीत ने पूछा।

'देखा था। वह कोई सफेद पोश था—सिर से पांव तक सफेद लिबास में ढका हुआ। हम शोर सुन कर बाहर निकले तो अंजना की लाश देख कर हम सबके कदम जैसे जम कर रह गए। फौरन बाद हमने एक मोटर-साईकिल स्टार्ट होने की आवाज सुनी। कपिला दौड़ती हुई बंगले के पिछवाड़े की तरफ भागी। उसने देखा कि मोटर-साईकिल एक औरत चला रही थी। उसके पीछे कोई सफेद लिबास में ढका बैठा था।'

'हम आ रहे हैं, सेठ जी !' बलजीत ने कहा और रिसीवर क्रैडल पर रख कर उठते हुए बोला, 'सेठ रघुनन्दन की पत्नी अंजना को कत्ल कर दिया गया है। आओ, सेठ के बंगले को चलें।'

वे तीनों होटल से बाहर निकले। कार में बैठ कर जब वे सेठ रघुनन्दन के यहां पहुंचे तो लोगों की भीड़ पहले से मौजूद थी। इन्स्पेक्टर शर्मा और उसके पुलिस कर्मचारी भी पहुंचे हुए थे।

सेठ रघुनन्दन बरामदे की सीढ़ी पर पैर लटकाए बैठे थे। वह चुपके-चुपके रो रहे थे। उनका बेटा, बहू, दोनों बेटियां चपला और कपिला रो-रो कर निढाल हो चुके थे। उनकी आंखें सूजी हुई थीं।

कुछ लोग सेठ जी को तसल्ली दे रहे थे।

बलजीत और उसके साथियों ने अंजना की लाश देखी। इसके बाद वे बंगले की दायीं दीवार की तरफ गए। उन्हें वहां कदमों के निशान दिखाई न दिये।

'इसका मतलब है कि तीर चलाने वाले ने रबर सोल के जूते पहने हुए थे।' बलजीत बोला।

इन्स्पेक्टर शर्मा ने उनके पास आकर कहा, 'बलजीत बाबू ! अब तो कत्लों की लम्बी सूची बन गई। अब और कितने लोगों का खून बहाया जाएगा ?'

'थोड़ा सब्र से काम लीजिये।'

'आप सब्र की बात कह रहे हैं, हमें लोगों और अफसरों की जली-कटी सुननी पड़ रही हैं। पुलिस के नाकारा होने की बदनामी सारे शहर में फैल चुकी है। बाहर निकलें तो लोग नफरत से देखते हैं, कोतवाली जायें तो अफसरों की फटकार सुननी पड़ती हैं।'

'इन्स्पेक्टर साहब ! आप जैसे कर्तव्य-निष्ठ आदमी का मैं दिल से आदर करता हूं। आपकी शिकायत बिल्कुल उचित है। मगर मेरी एक बात याद रखिये।'

'क्या ?'

'यह कि कोई भी बात अपने समय से पहले नहीं होती। यहां तक कि मौत भी अपने समय पर ही आती है। अपराधी को जब तक इस दुनिया में जीना है, वह जीकर रहेगा। जैसे ही उसके अंजाम का वक्त आएगा, वह गिरफ्तार होगा और फांसी का फंदा उसके गले में कसकर रहेगा।'

'आपकी बात सोलह आने सही है, लेकिन उन लोगों को क्या जवाब दूं जो समय से पहले हत्यारे का अंजाम देखने को अधीर हो रहे हैं ?' इन्स्पेक्टर ने पूछा।

'उनका ऐसा सोचना अच्छी बात है। अपराध की रोकथाम करना आपका और हमारा फर्ज ही नहीं, धर्म भी है। मेरे विचार में अब वह समय आ ही पहुंचा है कि मुजरिम अपने किये की सजा भोगे।'

'सच ?' इन्स्पेक्टर खुश हो गया।

'हां, इन्स्पेक्टर साहब ! मैं आज एक कोशिश करने वाला हूं। यह तो बाद में ही पता चलेगा कि अपनी कोशिश में मैं कहां तक सफल रहा। सबसे पहले मुझे हैवलॉक रोड के टैक्सी स्टैंड पर उस ड्राइवर से मिलना है जिसकी टैक्सी में सरस्वती को कत्ल किया गया। अगर मेरा शक सही निकला तो मैं आपको फोन करूंगा। यहां से लौट कर आप अपने दफ्तर में ही मेरे फोन का इन्तजार कीजियेगा।'

'जरूर करूंगा।' जवाब देने के साथ ही इन्स्पेक्टर शर्मा को कोई बात याद आ गई, 'बलजीत बाबू ! मैं आपको बताना भूल गया था, सरस्वती के पोस्ट-मार्टम पर एक आश्चर्य-जनक बात सामने आई है।'

'वह क्या ?' बलजीत ने उत्सुकता से पूछा।

'सरस्वती के बदन के पिछले हिस्से पर, मेरा मतलब है कि कंधों से लेकर पसलियों तक लम्बी-लम्बी खराशों के भूरे निशान हैं।'

इन्स्पेक्टर शर्मा की बात सुन कर बलजीत मुस्कराने लगा। उसने कहा, 'यह आपने बड़ी दिलचस्प सूचना दी हैं। अब आप सेठानी अंजना के पोस्ट-मार्टम की रिपोर्ट भी मुझे जल्दी पहुंचाइयेगा।'

'बलजीत बाबू ! मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं।'

'कौन-सी बात ?'

'प्रोफेसर नवल किशोर पांडे और कैलाश नाथ की प्रेमिका मिसेज सोमा ने बयान दिया था कि केवलकृष्ण उसे कोड़ों से पीटा करता था। सोमा के बदन पर भी खराशों के निशान पाए गए थे। कहीं वैसे ही कोड़ों के निशान सरस्वती के बदन पर भी तो नहीं हैं ?'

'यह बताइये कि सरस्वती की कलाइयों और टखनों के ऊपर भी क्या घेरेदार गोल निशान पाए गए हैं ?'

'जरूर पाए गए हैं। मुझे यह माजरा कुछ समझ में नहीं आया।'

शेष पृष्ठ ३६ पर



ओर इस तरह भारत ने आस्ट्रेलिया की टीम को पहली पारी में कुल १३१ रनों पर आऊट कर दिया। आस्ट्रेलिया को टॉस जीतने का कुछ लाभ नहीं हुआ।
भारत के स्पिनरों ने दिखा दिया है कि उन्हें खेलना आसान नहीं है। कोई भी खिलाड़ी उनके सामने जम नहीं पाया। अब भारत को अपनी पहली पारी में ज्यादा से ज्यादा रन बनाने हैं।
कौन बेवकूफ कहता है कि हमारा देश गरीब है? जहां चन्द्रशेखर, बेदी और प्रसन्ना जैसे स्पिनर हो सकते हैं वह देश गरीब हो सकता है? जब यह लोग भारत लौट आयेंगे तो हम इनको एयरपोर्ट से अपने कंधों पर बिठा कर ली आयेंगे। इन लोगों ने हमारे देश का नाम ऊंचा कर दिया है। हम भी इनको इनकी सेवाओं का फल देंगे।
इन तीनों खंडारियों को अगर कभी जासूसी सेवा की जरूरत पड़ी तो हम इनको ५०% रिबेट देंगे और इनका काम सबसे पहले कर देंगे। कभी यह हमारे घर आयेंगे तो इनको ताजमहल चाय और ब्रिटानिया के ग्लूकोज डी वाले बिस्कुट खिलायेंगे। इनके साथ फोटो खिंचवा कर अपने दफ्तर में टांग देंगे। इनका स्थान हमारे दिलों में इतना ही है जितना महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू जी का।
हमारे सामने यह नाजुक मौका है। इन महान खंडारियों को केवल खाली तारीफ के पुलों पर से सैर कराने से कुछ नहीं होगा। इनको इनाम मिलना चाहिये। कोई भी आदमी देश को नाम दिलाये, पिलपिल और सिलबिल उसे पुरस्कृत करने में पीछे नहीं हटते, सबसे आगे रहे हैं। हम तीनों स्पिनरों में अपने गुड़गांवे के गन्ने के खेत बांट देंगे। इनके बाल-बच्चे ऐस करेंगे। यह याद करेंगे किसी सेठ से पाला पड़ा था।
हमारे चालीस एकड़ के गन्ने के खेत इनको मिलेंगे तो वे बोत खुस हो जांगे। फसल के टैम मां गंडेरियां चूसने और गुड़ खाने से इनके परिवारों का जन्म सफल हो जायेगा। जिन्दगी सुधर जायेगी। किसी साल अकाल पड़े तो खेतों में यह बैटिंग की प्रैक्टिस भी कर सकते हैं। म्हारी खेती सोना उगलती है लेकिन हम दे देंगे, कोई बात नहीं।


हम हरयाणा के खालिस चौधरी हैं. अपनी बात से हम कभी नहीं मुकरते। थमको विश्वास न हो तो कभी हमको आजमा कर देख लेना। 'प्राण जाये पर वचन न जाये' हमारे लाइफ का मोटो है। हम अपनी जुबान के बोत पक्के हैं।
इनकी एक-एक बात हीरे की कणी होती है. शीशे पर फेरो तो उसको ऐसे ही काट देगी जैसे शार्क मच्छी के दांत मांस के लोथड़े को चीर देते हैं। गाम मां कई लोगों ने इनकी बातें हीरे की कणी समझ अंगूठियों में लगा रखी हैं।
अब हम डी. एम. एस. का दूध लेना छोड़ देंगे। उसमें मलाई नहीं आती। डेरी से भैंस का दूध लिया करेंगे. उस पर आई मलाई मूछों में लगाने के काम आयेगी। मूछों पर ताव देने का जमाना तो इब आया है।
चौधरी साहब ठहरो, यह क्या अन्याय कर रिये हो ? थम गुड़गांवे के तहसीलदार को टेलीफोन कर रहे हो कि पटवारी को चकबन्दी के कागजात लेकर भेज दे। अगर सारी जमीन स्पिनरों के नाम कर दोगे तो अपने बेटसमैनों को क्या दोगे ? सुनील गावस्कर और चेतन चौहान ने पहली विकेट की भागीदारी में अब तक ८६ रन बना डाले हैं। दोनों ऐसे जमे हुये हैं जैसे सर्दियों में शिमला के नलों का पानी जम जाता है। हो सकता है कि दोनों सैंचुरी बना डालें, उनको भी तो कुछ न कुछ इनाम मिलना चाहिये। अगर गावस्कर शतक बना जाता है तो उसका यह टैस्टों में लगातार पाचवां शतक होगा। विश्व रिकार्ड की बराबरी। पांच एकड़ जमीन और ट्रैक्टर तो उसी को मिलना चाहिए।
अच्छा, हैल्लो, मैं फिर फोन करूंगा आपको।
अब सो जाओ। भारत की स्थिति बोत मजबूत है, आज तो खूब गहरी नींद आयेगी। सपने में हम पर परियां फूलों की वर्षा करेंगी। टैस्ट मैच में ऐसी सुनहरी रात कभी नहीं आयी होगी। थम इसको सुहागरात ही समझो, सारे खेल प्रेमियों की।
इब सोर मत मचा भई ! सोने दे, सुबह हमें जल्दी ही उठना है। पांच बज कर पच्चीस मिनट से कमांट्री फिर शुरू होगी। ऐसा न हो कि बातों-बातों में टैम निकल जाये और हम सोते रह जायें। इससे बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण बात और कोई नहीं होगी, जब हमारे खंडारियों को पता लगेगा कि हम सुन ही नहीं रहे हैं तो वह अच्छा क्यों खेलेंगे ?


ट्रुन. ट्रुन ट्र्न. ट्र्न ट्रSSSSSट्र्न ।
रेडियो मां यह संगीत कैसे बाज रिया है । इस वक्त तो कमांट्री आनी चाहिये थी ।
मैं सुशील दोषी बोल रहा हूं. अपने सुनने वालों को फिर बता दूं कि रात को आई वर्षा के कारण खेल शुरू नहीं हो सका है। मैदान में पानी भरा है । अभी दो घंटे और खेल होने की कोई संभावना नहीं है । आसमान में अभी भी बादल घिरे हैं। हल्की-हल्की बूंदा-बांदी भी हो रही है ।
कहीं ऐसा तो नहीं हो गया कि थामसन ने हमारे बैटसमैनों के बाजे बजा दिये हों ।
रेडियो का सिडनी से सम्पर्क टूट गिया होगा ।
अब क्या किया जाये. यह तो बोत बुरा हुआ ।
हूह !
ऐह !
मैं मन्दिर में जाकर पूजा करूंगी कि जल्दी बारिश थम जाये और खेल शुरू हो । कहते हैं कि कुआंरी कन्या की पूजा भगवान जल्दी ही स्वीकार कर लेते हैं । ऐ नीली छतरी वाले! तू क्यों भारत के करोड़ों क्रिकेट प्रेमियों की परीक्षा ले रहा है । मैं अपनी तपस्या के बल से इन्द्र देव का सिंहासन डुला दूंगी ।
मैं चिमटा और खड़ताल बजाते हुये सीधे कैलाश पर्वत पर शिवजी के पास जाऊंगा और पूछूंगा कि यह क्या अंधेरगर्दी चल रही है, जब टैस्ट मैच में हमारी टीम जीत की ओर बढ़ रही थी तो बारिश बीच में कहां से टपक पड़ी । दुनिया में यह अन्याय क्यों हो रहा है ?
भाइयों सुनो. बारिश थम गई है और खेल शुरू हो गिया है । थमारी भक्ति रंग लाई ! दारासिंह ने ठीक ही अपनी एक फिलम में बताया है कि भक्ति में बड़ी शक्ति है ।
लेकिन यह क्या हो रिया है । बादलों के कारण और पिच गीली होने की वजह से गेंद स्विंग हो रही है जिससे तेज गेंदबाजों को काफी मदद मिल रही. है विशेषकर थामसन बहुत खतरनाक गेंदें फेंक रहे हैं ।
गावस्कर और चेतन चौहान दोनों आऊट हो गये हैं। अभी-अभी मोहिन्दर अमरनाथ भी कुल नौ रन बना कर आऊट हो गये । लेकिन घबराने की बात नहीं है. विश्वनाथ जम कर खेल रहे हैं । थम दोनों फिलहाल ईंट से माथा पींटने का प्रोग्राम पोस्टपोन कर दो ।



सिलबिल पिलपिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िए।

आपके पत्र

नव वर्ष का अंक एक पढ़कर बहुत खुशी हुई छुट्टन और मिट्ठन के नये साथी बच्चा झमूरा ने पहले अंक में ही हमें बहुत मनोरंजन कराया। बन्द करो बकवास और अर्थ-अनर्थ दिन पर दिन बहुत रोचक होते जा रहे हैं। सुरेन्द्र अरोड़ा—रिवाड़ी

अंक ५१ मिला, इसमें मोटू-पतलू तूफान से पहले, बन्द करो बकवास, परोपकारी, अर्थ-अनर्थ, सिलबिल-पिलपिल, छुट्टन और मिट्ठन, काका के कारतूस, चिल्ली-लीला बहुत अच्छे थे। कहानी 'इनाम का चक्कर' भी बहुत अच्छी रही। लेखक युद्धवीर का जासूसी उपन्यास 'खोफनाक आवाजें' भी बहुत अच्छा है। आपसे अनुरोध है कि आप 'मदहोश' बन्द कर दीजिए और फिल्म पैरोडी शुरू कर दीजिए। फैण्टम, क्यों और कैसे' भी अच्छे रहे।

राजिन्द्र 'अग्रवाल'—मुक्तसर

दीवाना का अंक ५१ व वर्ष १४ का अंक पहला (१) मिला। ये दोनों अंक मुझे चन्दा भरने के कारण तीन-चार दिन पहले मिल गए। अब आपसे जो मेरी शिकायतें थीं वे दूर हो गईं, पहली—हमारे यहां शनिवार को यानी दो दिन लेट दीवाना पहुंचता है, लेकिन मेरे चन्दे भरने से ये दोनों अंक मुझे सोमवार यानी पांच दिन पहले मिले। मेरी दूसरी समस्या ये कि अब मैं हर प्रतियोगिता में भाग ले सकता हूं, क्योंकि आपने अब अन्तिम तिथि देर से कर दी है। मेरी ये दोनों समस्याएं दूर करने की बधाई और नये वर्ष की बधाई हो।

ये दोनों अंक बहुत रोचक थे, अब तो मैं मुखपृष्ठ देखने से पहले 'खोफनाक आवाजें' पढ़ता हूं जिसने मेरा मन अंक ५० से चुरा लिया है। जब मैं कहानी पढ़ लेता हूं तो देखता हूं 'क्रमशः' तो मुझे दुःख होता है कि अब मुझे एक सप्ताह इन्तजार करना पड़ेगा, लेकिन जब पता चलता है मैंने सिर्फ कहानी पढ़ी और ये सब मोटू पतलू, बात-बे-बात की, परोपकारी, दीवानी चिपकी, चिल्ली लीला, मुखपृष्ठ, तथा छुट्टन और मिट्ठन नहीं पढ़े हैं तो मैं खुशी से कूदने लगता हूं। अब आप से मेरी यह प्रार्थना है कि आप इस पत्रिका को एक सप्ताह में दो बार कर दें या इस पत्रिका के पृष्ठ बढ़ा दें।

खत्री पीताम्बर के०—उल्हासनगर

मुखपृष्ठ पर चिल्ली की दीवानगी पर हंस-हंसकर दीवाना होते हुए दीवाना का अंक नं० १ पढ़ा। हास्य सम्राट चैपलिन के नाम चिल्ली का पत्र रोचक एवं तथ्यपूर्ण था। पोंगा पंडित की फिल्म स्टारों पर भविष्यवाणियां मनोरंजक थीं। पिलपिल-सिलबिल की बढ़ती हुई दीवानगियां हृदयस्पर्शी हैं। छुट्टन और मिट्ठन का शुभचिंतक 'बच्चा झमूरा' बेहद काम का आदमी मालूम हुआ। उसकी सेवायें प्राप्त करते रहें। इन्दु जैन की कहानी: 'केश: कांटों भरा ताज'' मनोरंजक थी। एक सीधी-सादी कन्या विद्या सिन्हा पर विजय भारद्वाज का लेख पसन्द आया। हरदीप गुलाटी—दिल्ली

दीवाना अंक ५० प्राप्त हुआ। इस बार मुखपृष्ठ पर रेलिंग को तोड़कर सीढ़ी का उपयोग कर चिल्ली ने अच्छी बुद्धि की सलाह दी। बेदी के टेबलफैन चिल्ली क्या हमारे सीलिंगफैन बन सकते हैं। हम जब होंगे ८०-६० साल के फिल्मी सितारों की तस्वीर को देखकर हंसी रोकी नहीं गयी। पर्दे पर चमकते हुए सितारों का क्या हाल होगा उस समय जब ये दर्पण में अपने चेहरे पर झुर्रियां देखेंगे या ये अंक उनके हाथ लगेगा तो? खोफनाक आवाजें कैप्टन युद्धवीर की दूसरी अच्छी कहानी शुरू हुई है, मोटू-पतलू सिलबिल-पिलपिल, छुट्टन और मिट्ठन का चिड़ियाघर अच्छा लगा। पंचतन्त्र हमेशा अच्छी सीख दे रहा है। परोपकारी, मदहोश काफी हास्यात्मक हैं।

किशन अग्रवाल—राँची

दीवाना अंक ४८ पढ़ा। पढ़ा क्या? दीवाना ने मुझे भी दीवाना बना दिया। परसाई जी की रचना 'केवल दस रुपये के लिए बहुत अच्छी लगी।

अगर आप हास्य कविताएं भी छापने लगें तो दीवाना में आठ चांद लग जायेंगे। चार तो सभी जगह लगते हैं। हास्य-व्यंग्य की प्रिय पत्रिका के सभी कलाकारों को बहुत-बहुत बधाई।

जगदीश खीचड़—जसवंतगढ़

अंक ५१ में चिल्ली को भिखारी के वेश में भी हंसते पाया तो हमें भी बरबस हंसी आ गई। चिल्ली-लीला तो हमेशा कमाल करती है। चिल्ली से अनुरोध है कि नेताओं की तरह कभी-कभी खिलाड़ियों, फिल्मी-कलाकारों आदि को भी 'प्रेम-पत्र लिखें। रवि रंजन—सासाराम

दीवाना अंक १, १६७८ मिला। चिल्ली ने जो किक मारी १६७७ को तो सीधा १६७८ ही मिला। हमें तो आशा थी १६७६ मिलेगा, खैर कोई बात नहीं। पता नहीं मोटू पतलू का 'मौत का घंटा' घसीटाराम के गले में ही क्यों पड़ता है। चिल्ली के पास शायद माता-पिता, दादा वगैरा की पैत्रक सम्पत्ति है तभी उसे कोई काम नहीं करना पड़ता। आप फैण्टम के पृष्ठ बढ़ा दें। दीवाना का नव वर्ष अनुरोध तो दीवाना बन गया। एक शिकायत है आपसे दीवाना नियमित नहीं आता। इसलिये इन्तजार नहीं हो पाता। अम्बरीष—दिल्ली

दीवाना का अंक एक प्राप्त हुआ। चिल्ली लीला पढ़ते ही हंसी आई। पिलपिल व सिलबिल के कारनामे अधिक रोचक लगे। धारावाहिक उपन्यास 'खोफनाक आवाजें' दिल को छूने वाली लगी। मोटू-पतलू व छुट्टन-मिट्ठन के साथ बच्चा झमूरा की शक्ल देखते ही हंसी का फव्वारा छूट पड़ा और फिर जब उसके कारनामे पढ़े तो दोबारा हंसी आ गई। दीवाना पंचतन्त्र बहुत बढ़िया लगा। दीवाना में शब्दों की हेराफेरी शुरू हो जाये तो चार चांद लग जायें। दीपक कुमार 'अमित'—सिरसा

दीवाना का अंक दो प्राप्त हुआ। इस अंक की सभी सामग्री बहुत ही रोचक और मजेदार लगी। विशेषकर 'काका के कारतूस', परोपकारी, विभिन्न चीजों पर कुछ दीवाने सुझाव, कब्र से वापसी, बन्द करो बकवास, और अभिनेत्री उई दय्या के इंटरव्यू' काफी पसन्द आए। लेकिन 'अर्थ-अनर्थ' न पाकर बेहद निराशा हुई। कृपया यह स्तम्भ बन्द न करें। दीवाना में हर सप्ताह प्रतियोगिताएं अवश्य आयोजित की जानी चाहिएं। मेरा सुझाव है कि दीवाना में आप 'मनोरंजन स्ट्रीट' फिर से शुरू कर दें और हमारी प्रिय पत्रिका की पृष्ठ संख्या भी बढ़ाने की कृपा करें। नव वर्ष को अनेकानेक शुभकामनाओं सहित। सनम—नई दिल्ली


मोटू-पतलू और चेलाराम की जासूसी कहानी....
एजेंट ७०७
रेल दुर्घटना हुई । फिर एक हवाई जहाज क्रैश हुआ तो खुफिया पुलिस इस निर्णय पर पहुंची कि देश में तोड़-फोड़ करने वाला एक बहुत बड़ा गिरोह अपनी जड़ें फैलाता जा रहा है । इस केस का पता लगाने के लिये इंस्पेक्टर वर्मा ने चेलाराम एजेंट ७०७ को अपने आफिस में बुलवाया है ।
हमारे जासूसों ने पता लगाया है कि गैंग एक और बड़े जहाज को टाइम बम से उड़ाने का षड्यन्त्र रचने वाला है,
यह बात डाक तार विभाग के हमारे जासूसों ने पता लगाई हैं, उनके हाथ एक पत्र लगा है, जो कोड में लिखा हुआ है । उस कोड की कुञ्जी बनाने पर कुछ-कुछ ऐसी ही बातें सामने आई हैं ।
आपको किसी पर शक है ।
इस पर ।
यह तस्वीर देख रहे हो ?
बहुत सुन्दर है ।
इसका नाम है सोनियां, यह 'ब्ल्यू लिप्स होटल' की स्टेज सिंगर और कैबरे डांसर है । बड़े-बड़े अफसर, मिलेटरी पर्सनल्ज, नेता और बिजनेस मैन इस शमा पर पतंगे की तरह मंडराते रहते हैं ।
हमें शक है कि सोनियां इन लोगों से राज की बातें मालूम करके गैंग तक पहुंचाती है । पर हमारे पास इसका कोई ठोस सबूत नहीं है ।
मैं समझ गया । अब यह केस मुझ पर छोड़ दीजिये ।
घर आकर उसने मोटू-पतलू के साथ एक स्कीम बनाई । और गाना गाने का अभ्यास शुरू कर दिया । चेलाराम का गला बहुत सुरीला था । इसलिए उसे अपनी इस स्कीम की सफलता पर पूरा विश्वास था ।
ज्यूली—! आई लव यू ज्यूली ।



बात है यह मामूली,
जैसे इक चिंगारी छू ली,
ज्यूली ! भाई लव यू ज्यूली—!!
शक्ल देखो इस मेंढ़क की। कह रहा है आई लव यू ज्यूली, यह लव करेगा दांतों वाला खरगोश। आवाज ऐसी है जैसे फटा बांस बोल रहा हो। लगता है प्लेबैक सिंगर बनना चाहता है, पर भला मेरे गाने का मुकाबला कर सकता है यह गिलहरी की दुम।
मन में एक जानी पहचानी स्कीम लेकर चेलाराम ने सर पर विग से अपनी शक्ल बदली और दूसरे दिन Blue Lips होटल पहुंच गया। मोटू और पतलू वहाँ पहले से ही वेटर की नौकरी कर चुके थे।
SONIA Night
कुछ देर खाना-पीना चलता रहा। तभी स्टेज पर फ्लड लाइट की धार पड़ी और स्टेज मैनेजर ने कहा...!
लेडीज एण्ड जेंटलमैन! अब आपके सामने पेश है हमारी बेहतरीन आइटम स्वर की रानी मिस सोनियां।
हॉल में हल्के-हल्के स्वर उभरे और सोनियां ने गाना शुरू किया...
तुम मुझे चांद की तस्वीर नजर आते हो,
जागते ख्वाब की ताबीर नजर आते हो।
मेरी बनती हुई तकदीर नजर आते हो,
तुम मुझे चांद की तस्वीर नजर आते हो।
क्या आवाज पाई है। लता मंगेशकर का स्थान ले लेगी किसी दिन।
गाना समाप्त करके सोनियां स्टेज से नीचे उतरी तो किसी ने उसका हाथ थाम लिया।
जरा बात सुनिये मिस सोनियां।
कौन हो तुम? हाथ छोड़ो मेरा।


ऐ मिस्टर । हाथ छोड़ो । यह क्या बदतमीजी है ?
तुम कौन हो बीच में पड़ने वाले ?
मैं यह हूं । कुछ समझ में आया ?
आह—!
तुमने कमाल कर दिया । ऐसे लोग मुझे रोज तंग करते रहते हैं ।
ऐसे दिलफेंक इसी तरह काबू में आते हैं । मगर इसका दांत टूट गया है तो इसे डेंटल सर्जन का पता कोई न कोई बता ही देगा ।
आइये, एक कप काफी हो जाए ।
शौक से, धन्यवाद ।
चेलाराम को पता नहीं था, कि उस पर किसी की नजर है ।
यह नया आदमी कौन है सोनियाँ के साथ ? इस को तो पहले कभी नहीं देखा ।
आप कौन हैं ? अपने बारे में कुछ बताइए ।
मैं भी गायक हूं ।
फिल्मों में प्लेबैक गाने देने के लिए कोशिश कर रहा हूं ।
That is fine गायक से गायिका की कितनी सुन्दर मुलाकात हुई है । क्या नाम है आपका ?
ब्रजकिशोर कुमार ।



बड़ा प्यारा नाम है । क्या किसी फिल्म में चांस मिला है ?
अगले सप्ताह बम्बई में आर० डी० बर्मन और लक्ष्मीकांत प्यारे लाल मेरी टैस्ट रिकार्डिंग करेंगे ।
इससे पहले क्यों न आप Blue Lips होटल में अपना प्रोग्राम दें ? मेरे साथ आपके डूएट बहुत अच्छे रहेंगे ।
मुझे तो कोई एतराज नहीं है ।
इस होटल के प्रोपराइटर मिस्टर लाल मेरी बहुत बात मानते हैं ।
उन्हें नये गायक की जरूरत भी है । चलिये, मैं आपको उनसे मिलवाती हूं ।
यूं ही कोई बेकार-सा बॉयफ्रेंड है ।
अगर इसके और मेरे डूएट गाने लोगों ने पसन्द किये ......
...तो मेरा फ्यूचर और ब्राइट हो जाएगा । और मैं इसे बम्बई जाने से रोक दूंगी ।
चलो पहले म्युजिक रूम में डुएट गाने की प्रैक्टिस कर लें । बास को वही गाना सुनायेंगे ।
म्युजिक रूम में पहुंच कर सोनियां ने अपनी गायक सहेलियों को बुलवा भेजा ।
देखने में तो सोनियां बहुत भोली लगती है । किसी को कोई शक ही नहीं हो सकता ।



सहेलियों से सोनियां ने चेलाराम का परिचय कराया ।
मेरे नये मित्र से मिलिये ।
यह है गायक ब्रजकिशोर कुमार ।
क्या तुम्हें विश्वास है कि यह बहुत अच्छा गाते हैं ।
ब्रजकिशोर कुमार को क्या किशोर कुमार समझ लिया है तुमने ?
सुनेंगे तो पता चल जाएगा ।
अपना कोई फेवरेट गाना सुनाइये ब्रजकिशोर कुमार
मुहम्मद रफी का गाया हुआ एक गाना सुनिये । पेश किया है···
मैंने जब चांद सितारों की तमन्ना की थी, मुझ को फुर्कत की स्याही के सिवा कुछ न मिला ।
वाह-वाह, जवाब नहीं इस सुरीली आवाज का
एक गाने के बाद फिर उन दोनों ने एक डूएट गाने की प्रैक्टिस शुरू कर दी ।
किश्ती का खामोश सफर है रात भी है तनहाई भी,
दूर किनारे पर बजती है लहरों की शहनाई भी ।
और इस प्रकार गाने की रिहरसल के बाद सोनियां सोच रही थी···
क्या आवाज पाई है । और क्या ब्यूटी है । हाथ से निकलने नहीं दूंगी अब।
चलो अब बास से मिलने चलें ।
वेटर बने हुए मोटू-पतलू अपनी ही उलझन में फंसे हुए थे ।
हमारे गले में जंजीर डालकर मेज के पाये से बांध लो फिर कहां जायेंगे ।
दांतों वाला खरगोश क्या हलुवा पूरी का मजा ले रहा है और हमारे पल्ले यह सूखे पापड पड़े हैं ।
तुम चले कहां जाते हो ।हमारे पास ही रहो ना वेटर ।



आगामी अंक में इन कलाकारों से फिर मिलेंगे।


छुट्टन और मिट्ठन के मित्र
बच्चा झमूरे की गर्लफ्रेंड
वैसे तो दीवाना के सभी पाठक बच्चा झमूरा के फैन हैं। पर उसे इस बात पर बहुत नाज है कि कालिज की गर्ल-स्टूडेंटस उस पर बहुत जान छिड़कती है। छुट्टन और मिट्ठन जब इसकी ऐसी बातों से तंग आ जाते हैं, तो वह कहता है कि तुम मेरी इस बात से चिड़ते हो कि मैं इतना हैंडसम क्यों हूं। तुम्हें मेरी बातों का यकीन नहीं आता तो···
मैं तुम्हें किसी दिन दिखा दूंगा कि मेरी गर्ल फ्रेंडस कैसे मेरी ओर खिंची चली आती हैं।
थोड़ी देर बाद बच्चा झमूरा अपने ही ख्यालों में खोया गर्ल्ज होस्टल के सामने बाजार में चला जा रहा था, कि रास्ते में उसे एक लड़की मिल गई।
हैल्लो मिस्टर झमूरा! हम उस रोज पार्टी में मिले थे, याद है तुम्हें?
ओह कानन तुम! मैं तो तुमसे मिलने की सोच रहा था। नहीं कानन की आवाज तो मोटी थी। तुम राधा हो! नहीं सुनीता, सुनीता भी नहीं, तुम दीपा हो।
मेरा नाम रूप माला है।
ओह रूप माला! मैं तो देखते ही पहचान गया था, तुम रूप माला हो।
चलो, किसी रेस्टोरेंट में चाय पीयें।
मुझे आज कुछ शोपिंग करनी है।
मैं करा दूंगा शोपिंग।
मैं घर से पैसे लाना भूल गई हूं। पहले घर चलना होगा।
पैसे मेरे पास हैं। तुम मुझे फिर दे देना।
एक दुकान पर शोपिंग की तो कई बंडल बंध गये।
यह लीजिये पैसे और पैकेट मुझे दे दीजिये।



आगामी अंक में इनसे फिर मिलना न भूलिये।

खेल खेल में

अजय पाण्डेय—बिहार

प्र० : गायकवाड़ ने अब तक कितने टैस्ट खेले हैं और कितने रन बनाये हैं क्या उन्होंने कभी टैस्ट शतक बनाया है कि नहीं ?

उ० : गायकवाड़ ने १३ टैस्ट खेले और कुल ७०३ रन बनाये। ८१ नॉट आऊट उनका उच्चतम स्कोर है।

दिनेश कुमार फूसरो—बिहार

प्र० : संसार में क्रिकेट का बादशाह कौन है और भारत में कौन है ?

उ० : संसार में तो खैर गैरी सोबर्स हो चुका है। ऐसा क्रिकेटर न पैदा हुआ पहले और न ही भविष्य में उम्मीद है। उनकी छोड़िये हां, भारत में बादशाह कहलाने लायक कोई नहीं है।

सुरेन्द्र पाल सिंह अरोड़ा—अमृतसर

प्र० : अजीत पाल सिंह अब हॉकी के कप्तान क्यों नहीं रहे ?

उ० : मांट्रियल ओलम्पिक में भारतीय टीम की हार के लिये अधिकारियों को कोई न कोई बलि का बकरा तो चाहिये ही था।

भंवरलाल आचार्य 'राजस्थानी'—कलकत्ता

प्र० : क्या कभी नवाब पटौदी ने किसी टैस्ट मैच में २०० से ऊपर रन बनाये हैं, कहां व कब ?

उ० : हां, १९६४ में दिल्ली में इंग्लैंड के विरुद्ध २०३ नॉट आऊट।

राजन चौधरी—पटियाला

प्र० : भारत में क्रिकेट का खेल कब से शुरू हुआ है ? अगर हो सके तो पहली टीम का नाम बताइये। यह कहां शुरू हुई थी ?

उ० : क्रिकेट भारत में ईस्ट इण्डिया कम्पनी वाले लेकर आये। शुरू-शुरू में इसे केवल राजे-महाराजे और अमीर ही खेलते रहे। १८९२ में कलकत्ता में पहला क्रिकेट क्लब बना था।

पुशविन्द्र सिंह रन्धावा—यमुना नगर

प्र० : इंग्लैंड के टैस्ट ओपनर 'जैफ बायकाट' का टैस्ट रिकार्ड क्या है तथा वे कितनी सैन्चुरीज बना चुके हैं ?

उ० : वे पाकिस्तान में हाल में चल रहे क्रिकेट सीरीज के हैदराबाद टैस्ट तक १५वां शतक बना चुके थे। कुल रन संख्या हम सीरीज समाप्त होने के बाद बतायेंगे।

दीपक कुमार अग्रवाल—वागबाहरा

प्र० : भारत का सर्वश्रेष्ठ बैड मिन्टन खिलाड़ी कौन है ?

उ० : प्रकाश पादुकोन।



प्रकाश पादुकोन

सुरेश चन्द्र शर्मा 'निशांत'—जबलपुर

प्र० : 'गैरी सोबर्स' जैसा खिलाड़ी बनने की क्षमता क्या इस समय किसी भी देश के खिलाड़ी में है। यदि है तो किसमें ?

उ० : गैरी सोबर्स जैसा खिलाड़ी न पहले कभी हुआ न ही फिर होने की आशा है। वह अपने आप में ही अकेला पूरी टीम के बराबर था।

राजेश कुमार—सुदर्शन पार्क

प्र० : सुनील गावस्कर, मदन लाल, विश्वनाथ, चेतन चौहान, को बल्लेबाजी में क्रम दो।

उ० : सुनील, विश्वनाथ, चेतन चौहान व मदनलाल।

हंसराज गेरा—रिवाड़ी

प्र० : वेस्ट इंडीज क्रिकेट टीम के प्रारम्भिक बल्ले बाज राय फ्रेडरिक्स का पूर्ण टैस्ट क्रिकेट रिकार्ड बतायें।

उ० : ५९ टैस्ट, ४३३४ रन, ८ शतक तथा उच्चतम स्कोर १६९, इसके अतिरिक्त फ्रेडरिक्स ने ६२ कैच भी लिये हैं।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२





बैडमिंटन कैसे खेलें

अब मान लीजिये खिलाड़ी 'ख' सर्विस करके शटल से खेलता है और कई बार शटल के एक-दूसरे के कोर्ट में आदान-प्रदान के बाद एक तगड़े शॉट से वह शटल को 'क' के कोर्ट में गिराने में सफल हो जाता है—तो 'ख' को एक पाइंट मिल जाता है—और इस तरह पाइंट हो जाते हैं 'वन—टू' यानी १—२ यानी 'ख' का १ पाइंट तथा 'क' के २ पाइंट।

बस इसी तरह खेल चलता रहता है और दोनों खिलाड़ी एक दूसरे के कोर्ट में शटल गिराकर पाइंट बनाने या सर्विस तोड़ने की कोशिश में लगे रहते हैं।

सर्विस करते समय शटल तिरछे कोर्ट में ही गिरनी चाहिये। यदि वह तिरछे कोर्ट में नहीं गिरती या शॉर्ट सर्विस लाइन या साइड लॉबी के बाहर या लांग सर्विस के बाहर गिरती है तो ऐसे में सर्विस करने वाला खिलाड़ी सर्विस खो देगा और सर्विस का अधिकार दूसरे खिलाड़ी को होगा।

सर्विस करने के तुरन्त बाद खिलाड़ी को अपने क्षेत्र में आ जाना चाहिये ताकि विरोधी खिलाड़ी शटल को इसके क्षेत्र में कहीं भी फेंके तो वह उसे आसानी से वापस कर सके।

सिंगल के खेल में जब स्कोर ०—० यानी लव-आल होता है तो सर्विस करने वाला खिलाड़ी अपने क्षेत्र के दायें कोर्ट से सर्विस करता है।

जब उसका एक पाइंट बन जाता है तो वह फिर सर्विस अपने बायें कोर्ट से करेगा। २ पाइंट बनने पर वह फिर दायें कोर्ट से सर्विस करेगा।

इसका मतलब यह है कि ०, २, ४, ६,८ यानी सम संख्या पर सर्विस हमेशा दायें कोर्ट से की जायेगी तथा विषम संख्या के पाइट जैसे १, ३, ५, ७, ९ आदि होने पर सर्विस बायें कोर्ट से की जायेगी।

जैसे-जैसे पाइंट बनते जायेंगे—खिलाड़ी अपने पाइंटों के हिसाब से कोर्ट बदल-बदल कर सर्विस करते रहेंगे।

मान लीजिये इस समय स्कोर ९—६ है। ९ पाइंट 'क' के हैं और ६ पाइंट 'ख' के तथा सर्विस करने वाला खिलाड़ी 'क' है तो वह सर्विस बायें कोर्ट में जाकर करेगा। मान लीजिये काफी देर तक शटल एक-दूसरे के कोर्ट में जाती है लेकिन 'ख' खिलाड़ी शटल से 'क' के क्षेत्र में शाट मारकर गिरा देता है और 'क' की सर्विस भंग कर देता है तो तब खिलाड़ी 'ख' सर्विस करेगा तो वह अपने क्षेत्र के दायें कोर्ट से सर्विस करेगा। क्योंकि उसके पाइंट ६ हैं जो सम संख्या है। अब यदि खिलाड़ी 'ख' ७ पाइंट बना लेता है तो वह सर्विस बायें कोर्ट से करेगा। ८ पाइंट पर दायें और ९ पर फिर कोर्ट बायें से सर्विस करेगा।

डबल गेम

डबल गेम में दो-दो खिलाड़ी भाग लेते हैं। इसमें कोर्ट की साइड लॉबी तथा बैक लॉबी दोनों सम्मिलित रहती हैं जबकि सिंगल के गेम में साइड लॉबी बंद होती है।

डबल के खेल में कोई खास फर्क नहीं होता सिर्फ सर्विस का ही फर्क होता है।

मान लीजिये एक तरफ खिलाड़ी 'क ख' हैं तथा दूसरी ओर 'अ ब' हैं।

सर्विस यदि 'क' कर रहा है और पाइंट लव आल यानी ०-० हैं तो वह सर्विस दायें कोर्ट से ही करेगा। माना यदि वह एक पाइंट अर्जित करता है तो वह दूसरी सर्विस करने के लिए बायें कोर्ट में पहुंचेगा तथा उसका खिलाड़ी दायें कोर्ट में आ जायेगा। मान लीजिये 'क' एक पाइंट और बना लेता है और २ पाइंट हो जाते हैं तो वह फिर दायें कोर्ट में आकर सर्विस करेगा और दूसरा खिलाड़ी 'ख' फिर बायें कोर्ट में चला जायेगा।

एक बात और, मान लीजिये स्कोर ५-६ है और सर्विस 'क ख' के पास है और 'क ख' के अंक ५ हैं। तो ५ पाइंट का मतलब है। सर्विस बायें कोर्ट से होनी चाहिये। अब यदि बायें कोर्ट में खिलाड़ी 'क' है तो वही सर्विस करेगा और वहां खिलाड़ी 'ख' है तो वही सर्विस करेगा।

इसी तरह यदि सर्विस भंग होकर 'अ ब' के ६ पाइंट हैं तो दायें कोर्ट में 'अ ब' में से जो भी वहां होगा वही सर्विस करेगा।

डबल गेम में एक खिलाड़ी अपने क्षेत्र में पीछे आने वाले शाट को सभालता है तथा दूसरा खिलाड़ी आगे की ओर शाट-सर्विस लाइन के पास आने वाले शाटों को संभालता है।

किन्हीं कारणवश यदि आगे वाला खिलाड़ी किसी शाट को वापस करने पीछे चला जाता है तो पीछे वाला खिलाड़ी तुरन्त उसकी जगह पहुंच जाता है।

इसमें यह बंधन नहीं कि किसी खिलाड़ी को किसी एक ही स्थान पर खेलना आवश्यक है।

इस प्रकार शटल को विभिन्न प्रकार के शॉटों द्वारा एक दूसरे के क्षेत्र में गिराते हुए पाइंट अर्जित करते हुये यह खेल चलता रहता है और जो दल या खिलाड़ी सबसे पहले १५ पाइंट बना लेता है, वही गेम जीत जाता है।

कभी-कभी गेम २१ पाइंट का भी हो जाता है।

जब दोनों ओर के खिलाड़ियों के पाइंट १३-१३ पर बराबर हो जाते है तो ऐसे समय सर्विस करने वाले खिलाड़ी को ५ पाइंट का अतिरिक्त गेम खेल कर उसे जीतना होता है। इसी तरह १४-१४ पर बराबर होने पर ३ पाइंट का अतिरिक्त गेम खेलना है। जो पहले पाइंट बना लेता है वही विजयी होता है।

रैकेट की पकड़ (ग्रिप)

बैड मिंटन के रैकेट को खेलते समय किस ढंग से पकडना चाहिये यह बात उत्तम खेल खेलने की दृष्टि से बहुत महत्व रखती है।

रैकेट की मूठ अथवा हत्था अंगूठे और तर्जनी के मध्य में रहता है। हत्थे का पृष्ठ भाग हथेली के पृष्ठ भाग पर रहता है।

कलाई का भार रैकेट के पीछे की ओर ही रहना चाहिये। इससे स्ट्रोक लगाने के लिये अतिरिक्त बल मिलता है।

स्मैश, बैकहैंड स्ट्रोक, फोरहैंड स्ट्रोक, वाली या ड्राप कैसा भी स्ट्रोक लगाने के लिये रैकेट की पकड़ में उंगलियों की स्थिति में थोड़ा बहुत परिवर्तन करना पड़ता है।

रैकेट को जब तक आप सही ढंग से पकड़ने की आदत नही डालेंगे तब तक आपके खेल में परिपक्वता तथा गति नहीं आ पायेगी तथा मुमकिन है आप बार-बार फाल्ट गेम (गलत या दोषपूर्ण खेल) के शिकार हों।

क्रमशः


फैण्टम और
ज्वाल देवता
आधी रात को जंगल में मुठभेड़।
!!
मुझे यकीन नहीं होता।
क्या निशाना है ? मुझे भी यकीन नहीं होता !
मैंने निशाना सिर्फ तुम्हारी बन्दूकों पर लगाया था क्योंकि तुमको मेरी बातों का जवाब देना है।
श्रीमान बैठ जाओ, कुछ बातचीत हो जाये।
मैंने कहा न कि मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहता।
फैण्टम की बात अगर कोई न माने तो वह जबरदस्ती भी करना जानता है जंगल की पुरानी कहावत है…
बैठ जाओ !
ओह !
ओह !
तुम कितने लोग इस जंगल में यह अफीम बेचने आते हो ?
दस या बारह…
शःशः इसको कुछ मत बताओ।
जब मैं कोई प्रश्न करूं तो उसका जवाब देना है समझे ?
हां, हां !
फैण्टम को जब गुस्सा चढ़ता है तो इसकी आवाज सुन कर शेर का खून भी जम जाता है।
हा !
ठीक है तुम एक दर्जन के करीब इस जंगल में अफीम लाते हो और पिछले कितने समय से ?
एक साल के करीब…
एक साल के करीब ? तुम्हारा मुख्य अड्डा कहां है और तुम कहां के रहने वाले हो ?
यह…हम यह कुछ नहीं बता सकते।
हमें इस बात के लिए मना किया गया है।





गुमनाम है कोई ?

प्रतियोगिता 29

इनाम 30 रु०

आपको यह बताना है कि यह किस कलाकार की तस्वीर है और क्या दीवानी बात कह रही है?

यदि एक से ज्यादा अच्छे हल हुये तो इनाम की राशि विजेताओं में बराबर-बराबर बांट दी जायेगी, अपने हल केवल पोस्टकार्ड पर ही इस पते पर भेजें :- गुमनाम है कोई प्रतियोगिता, टब, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-2 । पहुंचने की अन्तिम तिथि :- 18 फरवरी 78 एक पोस्टकार्ड पर एक हल भेजें।

क्यों और कैसे

प्र० : रबड़ किस तरह बनाया जाता जाता है तथा इसके क्या-क्या उपयोग हैं ?

मुहम्मद रफीक—दुलियाजान, आसाम

उ० : रबड़ एक लचीला उपकरण है जिससे टायर बनते हैं। रबड़ खिंचने वाला होने पर भी वाटरप्रूफ, मजबूत तथा बहुत अधिक चलने वाला होता है। इन्हीं गुणों के कारण टायर केवल रबड़ के ही बनाये जाते हैं। रबड़ के अन्य भी बहुत से उपयोग हैं। उद्योग में प्रयोग के लिए रबड़ की पेटियां तथा पाइप बनाये जाते हैं। आज के युग में रबड़ के छल्ले भी हर प्रकार से काम में लाये जाते हैं। रबड़ की तरह-तरह की गेंदें भी बनती हैं तथा पढ़ने-लिखने वाले बच्चे तो हर समय रबड़ का प्रयोग करते हैं, लिखाई मिटाने के लिए।

रबड़ दो प्रकार की होती है। प्राकृतिक तथा कृत्रिम। प्राकृतिक रबड़ पेड़ के दूध लैटक्स द्वारा बनाई जाती है। रबड़ के पेड़ की छाल में ढालवां गड्ढे बनाकर, उनके नीचे प्याले लगाकर ये दूध एकत्रित किया जाता है। इस दूध को छानकर इसमें एक प्रकार का तेजाब मिलाया जाता है, जिससे दूध स्कंदित होकर ठोस रबड़ का रूप धारण कर लेता है। इस ठोस रबड़ को दबाकर गट्ठे बनाकर मंडी में भेजा जाता है। कृत्रिम रबड़ की खोज सन् १९३० में जर्मनी में हुई थी। ये एक प्रकार का प्लास्टिक है जो कई मूल रसायनों को मिलाकर, गर्म कर बनाया जाता है। इस में भी प्राकृतिक रबड़ के समान ही सब गुण होते हैं। कच्चे रबड़ को वैलकेनाइज करने के लिये सलफर से संसाधित करते हैं। टायर बनाने के लिए रबड़ को वैलकेनाइज करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि इससे रबड़ और अधिक मजबूत हो जाता है।

वर्षों तक संसार की सारी रबड़ दक्षिण अमरीका के जंगलों में पाये जाने वाले वृक्षों से प्राप्त होती थी। ब्राजील की सरकार ने रबड़ के पेड़ के बीजों के निर्यात पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा रक्खा था परन्तु सन् १८७६ में चोरी से कुछ बीज इंग्लैंड पहुंचा दिये गये तथा मलाया और ईस्ट इंडीज में रबड़ के पेड़ उगाये गये। आज लगभग सारी प्राकृतिक रबड़ उत्तर पूर्वी एशिया द्वारा ही प्राप्त होती है।

****

प्र० : अंकों में शून्य कैसे लिखा जाने लगा और इसका आरम्भ कहाँ हुआ ?

रजत कुमार—दिल्ली

उ० : अंकों में शून्य का प्रयोग शुरू से नहीं किया जाता था। रोमन प्रणाली में तो शून्य बिल्कुल लिखा ही नहीं जाता शून्य की खोज मनुष्य द्वारा की गई बहुत बड़ी खोज है क्योंकि इस खोज के कारण ही संसार में गणित का इतना विस्तार हुआ। सोलहवीं शताब्दी तक यूरोप में अंक केवल रोमन प्रणाली द्वारा ही लिखे जाते थे, इस प्रणाली का आरम्भ लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था। रोमन प्रणाली काफी कठिन है। इस प्रणाली का आधार अंक '१०' है जिसे 'X' अक्षर द्वारा लिखा जाता है, सौ के लिए 'C', '१०००' के लिए 'M' का प्रयोग होता है। इसी प्रकार अंक एक के लिए 'I' तथा पांच 'V', पचास 'L', पांच सौ 'D', चार IV से लिखे जाते हैं। इस प्रकार '१,६४८' लिखने के लिए MDCXLVIII लिखना होता है। इस प्रणाली में कभी कोई घटाना तथा कभी बढ़ाना पड़ता है।

ईसा के जन्म से बहुत पहले ही भारत में अंक लिखने की बहुत उत्तम प्रणाली आरम्भ हो चुकी थी। इसका नाम भारत-अरबीय प्रणाली था, इसमें पूरे नौ अंक भिन्न-भिन्न रूप से लिखे जाते थे, १,२,३,४,५,६,७,८,९ तथा इसी के साथ '०' शून्य का भी प्रयोग होता था। इस प्रणाली में हर अंक का मूल्य अंक के स्थान के आधार पर होता है। हम जानते हैं कि अंक '१०' का अर्थ है, एक '१०' क्योंकि इसमें '१०' के स्थान पर एक लिखा है और इकाई में कोई अंक न होने की वजह से शून्य लिखा है। रोमन प्रणाली में शून्य न होने के कारण बहुत कठिनाई होती है। इसलिए ये निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शून्य की खोज भारत में ही हुई थी।

****

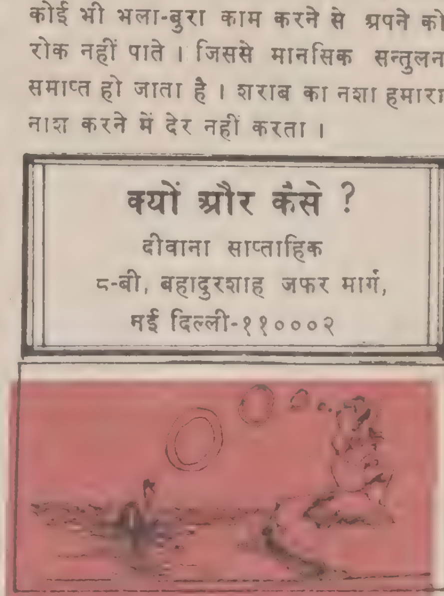
प्र० : किसी प्रकार का नशा करने से आदमी अपना सन्तुलन क्यों खो बैठता है ?

कमलकान्त जैन—दिल्ली

उ० : शराब हर समय हमारे शरीर में होती है। भोजन का स्टार्च, चीनी तथा वसा शराब बनकर रक्तधारा में मिल जाते हैं। और लगभग एक आउंस शराब हमारे रक्त के साथ शरीर का दौरा करती है। परन्तु अतिरिक्त शराब का शरीर पर दूसरा ही प्रभाव होता है। शराब नशीली या संवेदन मन्दक है। ये शरीर में नसों के अणुओं में घुसकर उन्हें गतिहीन कर देती है। पहले शराब अणुओं को प्रेरित कर उत्तेजित करती है फिर धीरे-धीरे उन्हें गतिहीन कर देती है। स्फूर्ती अथवा उत्तेजना बनाये रखने के लिए, शराब हल्के घोल के रूप में ही पीनी चाहिये। शराब से आमाशय तथा लार ग्रन्थियां उत्तेजित हो अधिक रस उत्पन्न करती हैं। इसी कारण यूरोपीय देशों में शराब को भोजन से पहले भूख बढ़ाने के लिए पिया जाता है। गरम शराब को शरीर बहुत जल्दी जज्ब कर लेता है, चीनी और कार्बन डाई-ऑक्साइड भी इसमें सहायता करती है।

दिमाग पर भी शराब का बहुत असर होता है, शराब पीने पर पहले बहुत चुस्ती अनुभव होती है, लगता है बोलने तथा कार्य करने की शक्ति बढ़ गई है। त्वचा का रंग लाल हो जाता है, ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। दिल की हरकत तेज हो जाती है तथा सांस तेजी से चलने लगती है। परन्तु तुरन्त ही दिमाग पर दबाव पड़ता है, उदासी सी अनुभव होती है। सोचने, समझने तथा ध्यान देने की शक्ति जाती रहती है। अधिक देर तक शराब पीने से हम अपने ऊपर नियन्त्रण की शक्ति भी खो बैठते हैं, अपनी समाज तथा शिक्षा को भूल जाते हैं और कोई भी भला-बुरा काम करने से अपने को रोक नहीं पाते। जिससे मानसिक सन्तुलन समाप्त हो जाता है। शराब का नशा हमारा नाश करने में देर नहीं करता।

क्यों और कैसे ?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२



मेरी गिरफ्तारी के वारंट

-फिक्र तौंसवी

उस रात, तो रास्ते में मैं एक बैलगाड़ी से टकरा गया और ऐनक का फ्रेम टूट गया। सबब यह था कि मैं बहुत खुश था इसलिए कि, उस शाम को एक साहित्य समारोह में मंत्री ने मुझसे कहा था, 'फिक्र साहिब, आप साहित्यकार भण्डार के कोहेनूर है।

और कोहेनूर हीरा जब खुशी के नशे में अपनी ऐनक तुड़वाकर घर लौटा, तो पत्नी ने घबड़ाकर सुनाया, 'आज आपकी गिरफ्तारी का वारंट आया था।'

मंझले बच्चे ने मारे डर के मुझसे चिपटते हुए पूछा, 'डैडी क्या आप कल जेल चले जाएंगे?'

सबसे छोटे बच्चे ने भी सत्याग्रह किया 'ऊं ऊं, मैं भी आपके साथ चलूंगा।'

पड़ोसी रघुराम मेरी आवाज को मानो सूंघ कर ही आ गया। बोला—'बेलिफ कल भी आएगा। आपको गिरफ्तारी से बचना चाहिए।'

पड़ोसी माधोराम भी, जिसकी रघुराम से खानदानी दुश्मनी थी आ गया और बोला—'फिक्र साहब भले आदमी हैं। इन्हें बचना नहीं, खुद ही कचहरी में हाजिर होना चाहिए।'

मैं सर पकड़कर बैठ गया। यह काहे के वारंट थे? किस अपराध में? मैंने अपनी पिछली चालीस साल की हरकतों पर नजर डाली तो अपराध केवल एक ही दिखाई दिया। पन्द्रह वर्ष की उम्र में लाईब्रेरी से एक पुस्तक चुराई थी। (आजकल मैं उस लाईब्रेरी की कार्यकारिणी का मेम्बर हूं।)

'तुमने वारंट की इबारत पढ़ी थी?' मैंने पत्नी से पूछा।

'हां, कर्जा न चुकाने के वारंट थे।' बीवी ने जिन्दगी में पहली बार सच्ची बात कह दी। हालांकि इसके पहले वह सैंकड़ों बार यह कह चुकी थी कि मैं आपसे सच्चा प्रेम करती हूं, मगर मुझे विश्वास नहीं होता था, सच्चा प्रेम तो वह सिर्फ अपनी मां से करती थी। मुझे याद है कि मैंने सरकार से एक कर्जा लिया था और वापिस इस ख्याल से नहीं किया था कि सरकार के पास मुझसे ज्यादा पैसा है।

लेकिन सरकार ने न्याय की खातिर मेरे नाम वारंट निकाल दिया। वारंट की कल्पना ही कितनी घिनौनी होती है। गंदी गाली भी शायद वारंट से कम अपमानजनक होती है। सबसे अधिक गुस्सा मुझे पड़ोसी रघुराम पर आया जिसे यह मालूम हो गया कि सरकार मुझे हथकड़ी लगाने आई थी। शक्ल तो देखो। एक मन आधा कटा हुआ है।

दूसरा गुस्सा सरकार पर आया। उसने मेरा वारंट क्यों निकाल दिया? किसी और ही का निकाल देती। क्या वह नहीं जानती, कि साहित्य का मंत्री मुझे कोहेनूर समझता है? एक ओर कोहेनूर, दूसरी ओर वारंट। एक ही व्यक्ति के बारे में सरकार की डबल पालिसी क्यों?

और, फिर, सरकार ने मुझे कर्जा दिया ही क्यों था? (मैंने मांगा ही कब था!) क्या सरकार को पता नहीं था कि मैं लौटा न सकूंगा? मैंने अकेले थोड़े ही लिया था। हजारों ने लिया था। सरकार का कर्तव्य था कि वह कर्जा मुआफ कर देती। इतिहास में तो यही होता आया है कि राज्यों के अरबों रुपये डूब जाते हैं, बल्कि स्वयं राज्य भी डूब जाते हैं।

रात भर डर और गुस्से में नींद नहीं आई। पेट भर सरकार को, कानून को, यहां तक कि घर पर चूहों को, कोसता रहा, जो रघुराम पड़ोसी की तरह निर्लज्ज हैं। जरा आंख लगी, तो सपने में पिता जी ने दर्शन दिए और कहा 'कर्ज चुका दो, बेटे! क्यों बाप का नाम डुबा रहे हो?'

आंख खुली तो सबसे पहला विचार यह आया कि बीवी-बच्चों को लेकर हरिद्वार चला जाऊं और घर के दरवाजे पर यह चिट चिपका जाऊं कि फिक्र तौंसवी अपने पापों के पश्चाताप करने के लिए तीर्थ-यात्रा पर गया हुआ है।'

लेकिन फौरन ख्याल आया कि अगर सरकार ने भगोड़ा घोषित कर दिया तो? अगर आज कम्बख्त बेलिफ ही फिर आ न मरा तो? अगर कचहरी में खुद हाजिर हो जाने पर कलक्टर ने जेल में ही डाल दिया तो।

पिता महोदय के उस सुझाव पर भी अफसोस हुआ कि 'कर्जा चुका दो बेटा। ऊंह! उन्हें मेरी सम्पत्ति का कितना गलत अनुमान था। क्या बीवी के गहने-कपड़े गिरवी रख दूं? संसार में नब्बे प्रतिशत बीवियां गहनों को पति से ज्यादा प्यार करती हैं। मुमकिन है बीवी इसी बात पर तलाक की धमकी दे डाले। क्या किसी वकील से सलाह लूं? मगर पिता जी ने एक बार यह उपदेश भी तो दिया था, 'बेटा! आधे हकीम और पूरे वकील के पास कभी न जाना; दोनों तुम्हारा रोग बढ़ा देंगे।'

सिर्फ एक ही रास्ता बाकी था; यह कि, तुरन्त बिना सोचे-समझे घर से निकल चलूं और बीवी से कह जाऊं कि बेलिफ आए तो कह देना कि मुजरिम भारत छोड़ कर टांगानिका चला गया है और इस जन्म में लौटेगा भी नहीं।

चुनांचे जल्दी-जल्दी कपड़े पहन, बीवी को दो-चार नसीहतें कीं और बाहर निकल गया। रास्ते में जो भी व्यक्ति खाकी वर्दी पहने गुजरता, बेलिफ लगता। उसे अपनी ही ओर देखता हुआ मानकर मैं आंखें बन्द करके उसे जुल दे देता। आज सड़क पर न जाने क्यों, बेलिफ ही बेलिफ वारंट लिए घूम रहे थे। लेकिन मैं किसी के हाथ नहीं आया। दिन भर कई दोस्तों, दफ्तरों और जान-पहचान वालों के यहां चक्कर लगाता रहा। (यही सब मेरे टांगानिका थे।) आखिर, शाम को एक रेस्तरां में जा बैठा और दोस्तों से गपशप लड़ाने लगा।

अचानक क्या देखता हूं कि एक जेन्टिलमैन हमारी मेज की ओर बढ़ रहा है। पास आते ही उसने मुझसे पूछा, 'क्या, आपका नाम फिक्र तौंसवी है?'

मैंने बड़ी बहादुरी से कहा, (कभी-कभी डर के मारे भी आदमी बहादुर बन जाता है) 'नहीं साहब, मेरा नाम शामनाथ है। अलबत्ता फिक्र तौंसवी को जानता जरूर हूं।'

'वो कहां रहते हैं?'

बात साफ थी कि यह वही कम्बख्त बेलिफ है जो भेष बदलकर आ गया है। सोचा इसे गलत बता दूं, लेकिन जल्दी में कोई गलत पता भी नहीं सूझा। बुरे वक्त पर बेईमानी भी साथ नहीं देती। चुनांचे कह दिया, 'वे टांगानिका चले गए हैं।'

यह बेचारा निराश होकर चला गया।

बाद में एक दोस्त ने बताया कि वे साहब एयर इण्डिया कार्पोरेशन के मुलाजिम थे। मुझे अफसोस हुआ कि बेचारा मुफ्त में बेलिफ बन गया।

शाम को देर से घर लौटा। अपनी योजना की सफलता पर कुछ प्रफुल्लित, मगर अपनी कायरता पर लज्जित, और वारंट की कल्पना पर तो पहले से भी अधिक भयभीत हुआ लौटा।

ज्योंही द्वार की कुण्डी खटखटाई बीवी ने अन्दर से आवाज दी 'कौन है ?'

मैंने मजाक में कहा, 'बेलिफ।'

अन्दर से बड़ी कर्कश आवाज आई, 'मुआ फिर आ गया। अजी बेलिफ साहब ! तुमसे तीन बार तो कह चुकी हूं कि फिक्र साहब टांगानिका गए हुए हैं।'

मैंने कहा, 'डालिंग, मैं टांगानिका से वापस आ गया हूं।'

बीवी ने 'डालिंग' शब्द को भी अस्वीकार करते हुए कहा, 'हां, हां, टांगानिका जो अफ्रीका में है।'

इस बार बीवी की होशियारी पर बहुत प्यार आ गया। मैं पहले समझा करता था, क्या बेकार सी बीवी है। पर यह तो डिप्लोमैट निकली।

मैंने फिर दरवाजा खटखटाया। अब के जवाब ही न आया। मैं डरा, कहीं बाहर ही न रह जाऊं। बीवी इतनी ज्यादा डिप्लोमैट हो गई है कि मेरी आवाज भी नहीं पहचानती। चुनांचे, मैं पिछली ओर से दीवार फांद कर दाखिल हुआ। बीवी ने देखते ही कहा, 'यह क्या ? आपने दीवार क्यों फांदी ?'

मैंने अर्ज किया, 'तुमने दरवाजा जो नहीं खोला।'

'आपने क्यों कहा था कि मैं बेलिफ हूं ? निगोड़ा आज तीन बार आया था। मुझे डर है कि कहीं वह फिर न आ जाये।'

'उंह ! पगली हुई है क्या ? मेरे हिसाब से तो अब सारे वारंट टांगानिका ही जायेंगे।'

बीवी बेतहाशा हंस पड़ी, बच्चे भी हंस दिए, मैं भी थोड़ा बहुत हंसा, लेकिन मन की किसी निचली तह में कोई बेलिफ बैठा कह रहा था, 'और अगर ये फिर आ गया तो…?'

दूसरी सुबह, वाकई बेलिफ आ गया।



मैं बरामदे में कुर्सी डाले अखबार पढ़ रहा था। अचानक क्या देखता हूं बेलिफ मेरी कुर्सी के ऐन पीछे खड़ा है। दिमाग ने कहा—'अगर यह बेलिफ है तो भी समझो बेलिफ नहीं है।

बेलिफ ने कहा—'…!'

मैंने झिड़ककर पूछा—'कौन हो ? क्या चाहते हो ?'

'साहब ! क्या फिक्र तौंसवी जी आप ही का शुभ नाम है ?'

'पहले आप बताइये, आपका शुभ नाम क्या है ?'

'मैं सरकारी बेलिफ हूं !'

'तो फिर मैं फिक्र तौंसवी नहीं हूं !'

बेलिफ मुस्करा दिया (कितनी भयानक मुस्कराहट थी जालिम की।) एक लम्हा वह मुझे घूरता रहा और जब तक वह घूरता रहा, मैं मन ही मन गायत्री का जाप करता रहा। अन्त में वह बोला—'आप हास्यकार हैं न ? इसीलिए मजाक कर रहे हैं। मैंने आपका चित्र एक पत्रिका में देखा था जिसके नीचे फिक्र तौंसवी लिखा था।'

'वह प्रेस की गलती होगी।'

'एक बार आपको कवि-दरबार में कविता भी पढ़ते देखा था ?'

'आपके पड़ौसी रघुराम ने अभी-अभी बताया है कि सामने की कुर्सी पर फिक्र तौंसवी ही बैठे हैं।'

अब मैंने गायत्री जपना बन्द कर दिया। इस कलियुग में गायत्री में भी जान नहीं रही चुनांचे गायत्री मंत्र की जगह मैंने अपने बाप की भलमनसाहत का आसरा लिया और कहा—'अच्छा चलो मजाक खत्म। आप क्या चाहते हैं ?'

'आपको कलक्टर साहब ने कचहरी में बुलाया है, आपकी गिरफ्तारी का वारन्ट है।'

'आह ! यही वह भाषण था जिसे मैं सुनना नहीं चाहता था ! मैंने वारंट ले लिया और खामख्वाह पढ़ने लगा। वारन्ट पर परम्परागत अपमानजनक इबारत थी जो साधारणतया कोर्ट के सम्मनों पर राजा टोडरमल के समय से चली आ रही है :

'हरगाह कि फिक्र तौंसवी नामक व्यक्ति सुपुत्र…जाति…पेशा…निवासी…स्वयं कचहरी में हाजिर होने की उपेक्षा कर रहा है। इसलिए ब-एवज चुकाने कर्जा, जो सरकार द्वारा जारी किया गया सन् १९५० के सम्बन्ध में फिक्र तौंसवी नामक मुजरिम का वारन्ट जारी किया जाता है ताकि मुजरिम को गिरफ्तार करके अदालत कलक्टर के रूबरू तारीख…तक पेश किया जाय।

हस्ताक्षर और मुहर
कलेक्टर साहब बहादुर

मुझे लगा, मानो मेरी बीवी-बच्चे खिड़कियों में से झांक रहे हैं और इधर-उधर की खिड़कियों से दो-चार पड़ोसियों की भी मनहूस नजरें मुझे घूर रही हैं।

'तो चलिए जनाब ?' बेलिफ ने ध्यान खींचा।

मैंने इसका उत्तर न देना ही उचित समझा।

रघुराम पड़ोसी हमारी बातों का मजा लेने के लिए आ गया। 'नीच।' मैंने मन में

कहा। वह बोला, 'क्या बात है, फिक्र साहब ?'

मैंने कहा, 'कुछ नहीं, इन साहब की भैंस गुम हो गई है सो पूछ रहे हैं, हमारे यहाँ तो नहीं आई।'

रघुराम बोला—'मामूली बात है, मुझ पर छोड़ दीजिए। भ्राता जी ! जरा इधर मेरी बात तो सुनना ?'

वह भ्राता जी को एक ओर कोने में ले गया और खुसर-पुसर करने लगा। शायद उसे भड़का रहा था कि 'फिक्र तौंसवी को जरूर पकड़कर ले जाओ, वरना मैं तुम्हारी रिपोर्ट कर दूंगा...' बेलिफ बराबर सिर हिला रहा था। इतने में रघुराम मेरे पास आया और कानाफूंसी करते हुए बोला, 'अजी, दो रुपये दे दो, टलजाएगा।'

मैं स्वभाव से ही घूसखोरी के खिलाफ हूं, लेकिन सोचा, इस नियम को किसी और बढ़िया मौके के लिए रख लूं। झट दो रुपये निकाल कर रघुराम की हथेली में थमा दिये। रघुराम ने बेलिफ की तरफ बढ़ा दिये। बेलिफ ने दोनों रुपये जमीन पर पटक दिये।

'थोड़े हैं क्या ?' रघुराम ने बेलिफ की खानदानी गरीबी को उभारा।

बेलिफ ने घृणा से जमीन पर थूकते हुए कहा, 'क्या आप मुझे घूसखोर समझते हैं ?'

मैंने और देने के लिए जेब से जो तीसरा रुपया निकाल लिया था, उसे लौटाकर जेब में ही डाल दिया। सच्चे और ईमानदार आदमी से कभी-कभी कितना डरना पड़ता है ? रघुराम ने भी अपनी चाल बदल ली। बोला—'बेलिफ तुम जानते हो कि फिक्र साहिब कितने बड़े लेखक हैं।'

मैंने मन ही मन कहा—'मैं तो जानता हूं ?'

बेलिफ ने जवाब दिया—'क्यों नहीं ? मैं इनके लेखों का प्रशंसक हूं, लेकिन मैं सरकार का नौकर भी हूं। यह मेरी नौकरी का सवाल है।'

बेलिफ का तर्क जोरदार था। मैं बेबस हो गया। अब मुझे बेलिफ पर नहीं सरकार पर गुस्सा आ रहा था। यह कैसी सरकार है जिसका बेलिफ और कल्चरल मिनिस्टर, दोनों ही मेरे प्रशंसक हैं, फिर भी मेरी गिरफ्तारी को नहीं टाल सकते ? ऐसी सरकार से क्या लाभ ? ऐसी सरकार को बदल देना चाहिए। ऐसी सरकार मुर्दाबाद ? इन्कलाब जिन्दाबाद ?

थोड़ी देर तक मनहूस-सी चुप्पी छाई रही। फिर मैं बिना सोचे, एक ओर चलने लगा। बेलिफ भी मेरे पीछे-पीछे चलने लगा। मैंने रूमाल से नाक साफ की। बेलिफ ने भी वही किया।

बेलिफ मेरा पीछा क्यों कर रहा है ? मुझे चोर समझता है ? यह तो डूब मरने की बात है। मुझे भलेमानस की तरह इसके साथ हो लेना चाहिए। तभी इस भले आदमी के पांव लड़खड़ाने लगे। बेलिफ ने कहा, 'चलिए साहब, अब और कोई बहाना न सोचिए।'

'अब बहाना कैसा ?' मैं अकड़ गया 'मैं तुम्हारे वारन्ट-सारन्ट से नहीं डरता। अभी कपड़े बदलकर तुम्हारे साथ चलता हूं।'

'मगर आप कपड़े बदलने को भी नहीं जा सकते ? आप जानते हैं, मुझे हथकड़ी डालने का अधिकार भी है।'

जी चाहा कि बेलिफ के मुंह पर तमाचा जड़ दूं, लेकिन प्रशंसक समझ कर रह गया। अपमान, हथकड़ी, जेल, कलक्टर मेरे इर्द गिर्द भूतों की तरह नाचने लगे। जैसे कोई डरावना सपना देखते-देखते आदमी बोल नहीं पाता, वैसे ही मेरी जुबान भी बन्द हो गई। मुझे यों लगा कि खिड़की में से झांकती हुई मेरी बीवी ने एक दर्दनाक चीख मारी है। शायद जमीन पर गिरकर बेहोश हो गई हो ? (कभी-कभी इन पत्नियों को पतियों से सच्चा प्रेम भी हो जाता है।)

बस इसके बाद की कहानी तो बहुत मामूली है बल्कि फिजूल सी है। क्योंकि जब मैं कचहरी पहुंचा तो कलक्टर ने उठकर मुझे गले लगाया, मुझे सिगरेट, चाय और बिस्कुट खिलाए, बेलिफ के कन्धे को थपथपाया कि शाबाश ? तुमने मेरी आज्ञा का पालन किया और फिक्र साहब को गिरफ्तार कर लाये। फिर मुझ से मुखातिब होकर कलक्टर साहब बोले, 'मैं आपका सहपाठी था। याद है हम दोनों खेतों में गाजरें चुराया करते थे ? अब तो कलक्टर बनकर यहां आया हूं और आप महान लेखक बन गये हैं—' फिर तो हम दोनों गाजरें चुराने के किस्से याद कर करके खूब हंसते रहे और जब हंस-हंस कर हम बेदम हो गए तो साहब मुझे अपनी कार पर घर छोड़ गए ?

चना कुरमुरा

पत्नी— क्यों जी, इतनी देर तक कहाँ रहे ?

पति— देखो, तुमने फिर गलती की। समझदार स्त्रियां अपने पतियों से ऐसे प्रश्न नहीं किया करतीं।

पत्नी— मगर समझदार पति तो अपनी पत्नी से.........

पति— रहने भी दो, समझदार पति के पत्नी होती ही नहीं।

●

पत्नी— मैंने तुमसे सिर्फ इसलिये शादी की कि तुम पर मुझे तरस आगया, क्योंकि तुमसे तब कोई बात भी नहीं करता था।

पति— हाँ, प्रिये, मगर अब सभी मुझ पर तरस खाते हैं।

●

दो नवविवाहित पुरुषों को सफर में अपनी अपनी पत्नियों सहित कुछ दिनों तक एक ही सराय में ठहरना पड़ा। दोनों की नई-नई पत्नियाँ थीं। अतः दोनों खूब आनन्द से रहते थे। एक ही सराय में रहने के कारण दोनों पुरुषों में दोस्ती हो गई। छः महीने बाद अचानक दोनों की मुलाकात हो गई। तब एक ने दूसरे से पूछा— 'कहो, मित्र, तुम्हारी पत्नी कैसी है ?'

दूसरे ने जवाब दिया, 'भाई, वह तो स्वर्ग की देवी है।'

पहला— 'तब तो मित्र तुम बड़े भाग्यवान हो। मेरी तो कम्बख्त अब तक जीवित है।'

●

पत्नी— सुनिये तो, कल रात मैंने एक सपना देखा है कि मैं और आप एक दुकान पर गये हैं। उस दुकान में सोने चांदी के गहने ....

पति— पर यह सब बातें सपने की हैं न ?

पत्नी— उस दुकान से आपने मेरे लिए एक गहना खरीद दिया, तभी मैंने जान लिया कि यह सब सपना है।


जहांपनाह, हिन्दुस्तान में इतना बड़ा अन्याय हो रहा है जानवरों के साथ और आपको पता नहीं ?
कैसा अन्याय ?
आपको पता है भारत में २६ जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाई जाती है।
उसमें केवल हाथी, घोड़े और ऊंटों को भाग लेने दिया जाता है। बाकी और जानवरों को क्यों नहीं ? यहां तक कि आप जैसे शहंशाह-ए-जंगल को भी परेड में स्थान नहीं मिलता। यह जाति-पांति व्यवस्था नहीं तो और क्या है ?
हजूर मुझे तो शक है कि हाथी, घोड़े और ऊंट असल में आदमियों के एजेन्ट हैं।
मैं अभी एक सख्त लैटर भारत सरकार को भेजता हूं और पूछता हूं कि और जानवरों के साथ यह अन्याय क्यों ?
जहांपनाह, भारत सरकार से जवाब आया है। उन्होंने लिखा है कि असल में साहब आदमी ही ऐसा जानवर है जो परेड में भाग नहीं लेता। शेरसिंह हमारे राज्य मंत्री हैं। गीदड़ और चूहों की मानव समाज में भरमार है। लोमड़ी की तरह ४२० और बन्दर व कव्वे की तरह चालाक आमतौर पर आदमी मिलते हैं। उल्लू, गधों और सूअरों की तो कमी नहीं है। भेड़िये, बगुले भगत, शतुरमुर्ग राजनीति में बेशुमार मिलते हैं। राजनीति में गिरगिटों की भी कमी नहीं है।
फिर तो बात ठीक है—जानवरों को काफी रिप्रेन्जेटेशन मिली है।
पंचतंत्र
भाइयों, इस पंचतंत्र का एक ही सारांश है वह यह कि गोलमोल सरकारी स्पष्टीकरण अर्थात आफीशियल एक्सप्लेनेशन काफी सारे कन्ट्रोवर्सरीज यानि विवादों को ठंडा कर देता है।

पृष्ठ १३ से आगे

'यह माजरा ही तो इस केस का है।'

बलजीत की बात का इन्स्पेक्टर शर्मा मतलब न समझ सका।

बलजीत अपने साथियों को लेकर हैवलॉक रोड के टैक्सी-स्टैंड को चल दिया।

इन्स्पेक्टर शर्मा के हुक्म के मुताबिक टैक्सी-ड्राइवर अमोलकराम स्टैंड पर मौजूद था।

बलजीत ने उससे पूछा, 'अमोलकराम जी ! जो औरत बैल-बॉटम पैंट में आपकी टैक्सी में सवार हुई थी और जिसने जाते-जाते आपके सिर में रिवाल्वर का दस्ता मारा था, क्या आपने उसके हाथों पर ध्यान दिया था ?'

'मैं आपका सवाल नहीं समझा ?' टैक्सी ड्राइवर ने बलजीत के सवाल पर हैरानी प्रकट की।

'मेरा मतलब है कि क्या आपने उस कातिल औरत की कलाई देखी थी ?'

'जी हां।'

'आपको उसकी कलाई में कोई खास बात नजर आई थी ?' बलजीत ने पूछा, 'मेरा मतलब यह है कि उसकी कलाई पर कोई निशान भी था ?'

'हां ?'

'कैसा ?'

'गोल-सा काला निशान था।'

बलजीत मुस्करा दिया। उसने ड्राइवर से कोई और सवाल न पूछा।

होटल लौट कर बलजीत और उसके साथियों ने चाय मंगाई।

अनिला ने पूछा, 'अभी तक हम इतना ही जान पाये हैं कि इस हत्याकाण्ड के पीछे दौलत की भूख है। असली मनोरथ अभी हमारी आंखों से छिपा हुआ है। इन वारदातों का उद्देश्य क्या है ? हत्यारा कौन है ?'

'सुनो अनिला ! जासूस को छोटी-छोटी कड़ियां जोड़ कर दिमाग में एक साफ तसवीर बनानी पड़ती है। उसी तसवीर में वह असलियत को पकड़ लेता है।' बलजीत ने समझाया।

'क्या आप असली भेद पा गए हैं ?'

'हां ?'

'किन कड़ियों को जोड़ कर ?'

'शुरू से गिना देता हूं—कई रायफलें मिलीं; सोमा, सरस्वती और सरस्वती की हत्यारिन की कलाइयों पर घेरेदार काले निशान और बदन पर खराशें पाई गईं; केवलकृष्ण के बंगले के पीछे कब्र के पास तहखाने में दौलत और हथियारों का भंडार ये कड़ियां हैं जिन्हें जोड़ कर मैंने इस हत्याकाण्ड की असलियत को साफ-साफ भांप लिया है।'

राजीव खुश होकर बोला, 'आपका मतलब है कि हत्यारे या हत्यारों की सूरतें आप पहचान गए हैं ?'

'हां ?' इसके साथ ही बलजीत ने अपने साथियों को अगली कार्रवाई के बारे में समझाया।

अनिला और राजीव की आंखें चमकने लगीं।

शाम का समय था।

सान्याल रोड पर बंगला नंबर १८ के लॉन में मिसेज चित्रा बाली एक कुर्सी पर विराजमान थी। उसके सामने बेंत की कुर्सी पर एक महिला बैठी थी। मिसेज चित्रा ने पूरी आस्तीन का ब्लाउज पहन रखा था। उसने अपने सामने बैठी महिला से कहा, 'क्या तुम्हें आशा थी कि इतना कुछ करना पड़ेगा ?'

हालात ही ऐसे बन गए कि हम मजबूर थे। वह अगर हमें आर्थिक रूप से तबाह करने की चाल न चलता तो ऐसा क्यों होता ?'

'सुरेखा ! बात बहुत दूर तक जा पहुंची है।' मिसेज चित्रा बोली।

तभी बंगले के गेट से आवाज आई, 'ईश्वर सब पर दया करता है। वही सबकी आस पूरी करता है। वही किस्मत बनाता और बिगाड़ता है। जिसके भाग्य में जो लिखा है, उसे वह जरूर मिलकर रहता है। ईश्वर की कृपा सब पर बरसती है। आपकी परेशानी के दिन बीत गए। आज आपकी परेशानी का अन्तिम दिन है। मालिक ने आपकी सुन ली।'

मिसेज चित्रा और सुरेखा ने चौंक कर गेट की तरफ देखा।

गेट के पास एक फकीर खड़ा था—सफेद बाल, सफेद भवें, कौड़ियों वाला झोला कंधे से लटकता, कानों में सीप के बने बाले, गले में मोटे-मोटे मनकों की माला, कलाइयों में कांच के दानों की मालाएं लिपटी हुई थीं। उस फकीर के दायें हाथ में काला डंडा था। फकीरनी का हाथ उसके कन्धे पर था, जैसे कम दिखाई देता हो और उसने सहारा ले रखा हो।

सुरेखा ने चित्रा से कहा, 'इसे कैसे पता चला कि हम किसी परेशानी में हैं ? यह जरूर कोई सच्चा और पहुंचा हुआ फकीर है। जरा इसे बुला कर पूछना चाहिए।' यह कह कर वह उठी और गेट खोल कर बोली, 'आओ साईं बाबा, अन्दर आ जाओ ! इधर कैसे आ गए तुम ?'

'वही भेजने वाला है, जिधर भी भेज दे।' फकीर ने दोनों हाथ आकाश की तरफ जोड़ दिये, 'उसका हुक्म हुआ कि मैं तुम्हारे पास पहुंचूं। मैं चला आया।'

'आओ-आओ, मैं सहारा देती हूं।'

'हमें सिर्फ उसी का सहारा है। सहारे की जरूरत तो आपको है।' फकीर बोला।

सुरेखा ने फकीर की लाठी पकड़ ली और फकीरनी के साथ चित्रा के पास ले आई।

फकीर ने डण्डा और झोला घास पर रख दिया और खुद भी घास पर बैठ गया। फकीरनी उसके पास ही बैठ गई।

'साईं बाबा ! आपको कैसे मालूम हुआ कि हमें कोई परेशानी है ?' चित्रा ने पूछा।

'भगवान ने हम सबको ऐसी आंखें दी हैं जिससे हम दुनिया की चीजें देखते हैं। अपने कुछ बन्दों को वह ऐसी आंखें भी दे देता है जो भगवान की तरह सृष्टि के जर्रे-जर्रे में झांक लेता है। जिस चीज को तुम तलाश रही हो, वह तुम्हें आज ही मिल सकती है।'

'साईं बाबा ! हम क्या तलाश रही हैं ?' सुरेखा ने जान-बूझकर यह प्रश्न पूछा।

'यह सवाल तुम्हें नहीं पूछना चाहिये। भगवान के बन्दों का इम्तहान नहीं लिया जाता। तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि तुम क्या ढूंढ़ रही हो। जरा अपना हाथ दिखाना।'

चित्रा ने अपना हाथ फकीर की तरफ बढ़ा दिया।

'नहीं, ऐसे नहीं। कुहनियों तक हाथ नंगा कर दो। मैं तुम्हारी कलाई में एक माला लपेट दूंगा जो तुम्हें कामयाब बनायेगी।'

चित्रा ने आस्तीन का कफ खोला और कुहनी तक बाजू नंगा कर दिया। फकीर ने झोले में से माला निकाल कर उसकी कलाई में लपेट दी। उसने कहा, अब तुम बताओगी कि क्या ढूंढ़ रही हो या मैं बताऊं ?'

'तुम्हीं बताओ, बाबा।'

फकीर हंस पड़ा। उसने झोले से कागज और पेंसिल निकाली।

क्रमशः

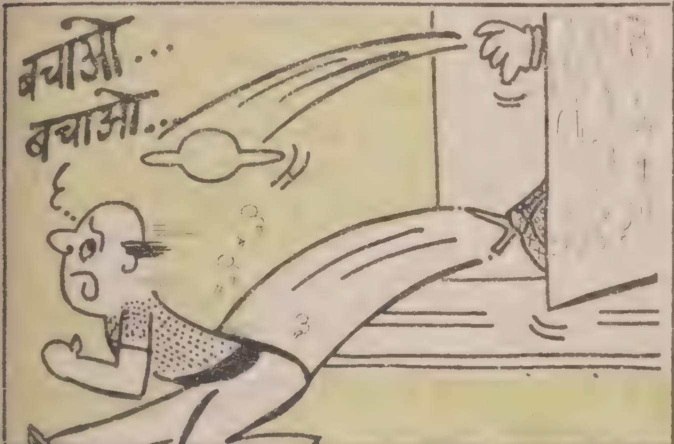
दीवानें जांच आयोग

पहले केन्द्रीय सरकार व अब प्रांतीय सरकारें भी धड़ाधड़ जांच आयोग बैठा रही हैं। पुराने जमे लोग इनसे घबरा रहे हैं। आजमाइए कुछ दिए हुए नुसखे—शायद काम बन जाये।

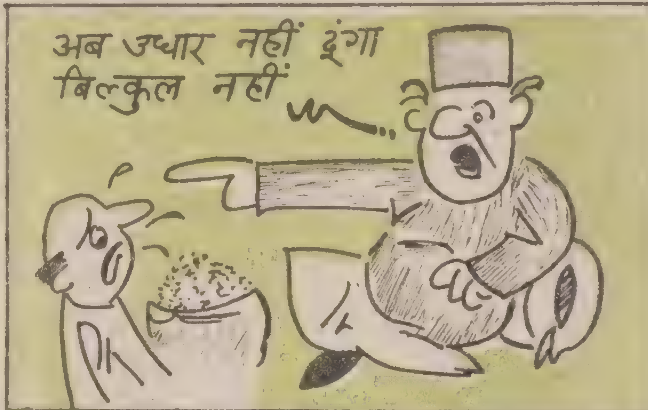
व्यंग्यचित्रकार—प्रियराज



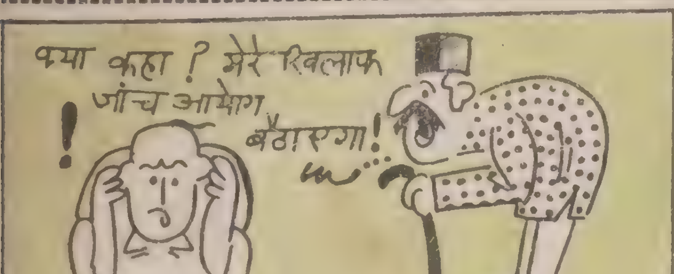
पत्नी के अत्याचारों के खिलाफ़....



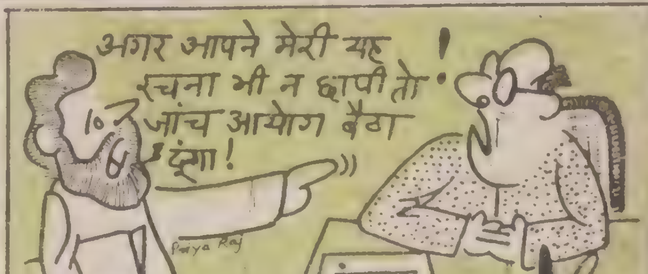
ससुराल वालों के खिलाफ...जो स्वयं आपके घर में आपका रहना ही दूभर किए रहते हैं.



पसारी के खिलाफ: जो आपके उधार पटा देने के आश्वासन को नहीं मानता। जबकि आप आश्वासनों के सहारे ही अपना वोट तक देते हैं।



छात्र मुर्गा बनाने वाले मास्टरों के खिलाफ़ जांच आयोग बैठाने की धमकी दे सकते हैं।



संपादक के खिलाफ...जो लौटती डाक से आप की रचनाएँ वापिस कर देता हो।

शुक्र है फिजूलखर्ची जिन्दा है !

इन्दू जैन

मीत न नीति गलीत ह्वै,
जो धरिए धनु जोरि।
खाये खरचे जो जुरे,
तो जोरिए करोरि ॥

बिहारी का यह दोहा पढ़ कर मुझे कितना सुख मिलता है मैं ही जानती हूं। जिस परिवार में मैंने जन्म लिया, वह दुनिया के सारे सुख जानता था लेकिन उसने संचय-सुख कभी नहीं जाना। ऐसे परिवार में पलने वालों को विरासत में गाड़ी-घोड़ा, बंगला और गड़ी हुई सोने की ईंट भले ही न मिलें रोजमर्रा के मामूली सुख, जो मेरे विचार में जीवन को भरा-पूरा और जीने लायक बनाते हैं—पूरी मात्रा में मिलते हैं। ऐसे बच्चे 'खुले हाथ' को कई पर्यायों से पुकारते हैं—बड़ा दिल, उदारता, सखाभाव, विश्वबंधुत्व, साधु-भाव इत्यादि। यानि 'लव दाई नेवर एज़ दाइसेल्फ'।

लेकिन एक दिन यह नींद टूटती है।

इस मधुर लापरवाही को एक निहायत दुनियादार, समझदार किस्म का विशेषण आकर झकझोर जाता है। विशेषण है फिजूलखर्च।

वास्तव में फिजूलखर्ची का दोषारोपण हर एक हर दूसरे पर करता है। मैं नहीं मानती कि केवल पति को इसकी शिकायत पत्नी से होती है। अगर ऐसा होता तो आसानी से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि पति को निरन्तर यह खतरा बना रहता है कि स्त्री क्योंकि कमाई की मेहनत नहीं करती—नहीं जानती कि घड़ी की सुइयों से बंधे इस जीवन में—दीमक लगी फाइलों, लाल फीते में बंधी अर्जियों और विभिन्न ऊँचाइयों की कुर्सियों की सनक कितनी जानलेवा है। भँवर से घिरे, शार्क, व्हेल और मगरमच्छ से पटे समुद्र में तीस-इकत्तीस दिन डूब कर एक 'पे-चेक' हाथ लगता है। जिसे यानी महीने के पहले सप्ताह ही भुना कर ताश के पत्तों की तरह फेंट, बांट डालती है। यदि दोषारोपण का कारण इतना सरल होता तो इन्सानी दिमाग एक उलझी हुई रेशम की लच्छी न होता।

गृहस्थी में कमाने, न कमाने वाले बिंदुओं को लेकर एक त्रिकोण बनता है, कुछ नमूने पेश हैं।

पति ने पहली तारीख को वेतन लाकर पत्नी के हाथ में रख दिया और बड़े प्यार से कहा, 'लीजिये सरकार—अब हमें कुछ पिक्चर-विक्चर दिखाएंगी।'

शाम को इत्मीनान से सिनेमा देखा जाता है और फिर रेस्तरां में खाना-पीना होता है। तीसरे दिन पति के मित्रों का एक दल जोरदार डिनर पर पहुंचता है। दूसरे हफ्ते उदारता की झोंक में खरीदारी होती है—हजार मना करने के बावजूद पत्नी के लिए साड़ी, बच्चों के लिये खिलौने और अपने लिए टैरिलिन की कमीज।

महीने के तीसरे हफ्ते जब पत्नी हाथ तंग होने की शिकायत करती है तो पति के माथे पर सौ-बल पड़ जाते हैं। वेतन पत्नी के हाथ पर रखा गया था। सारा खर्च वह करती थी। पति तो कमाने की मशीन भर है। फिर उसके अपने खर्च हैं ही क्या? उसे कोई बुरी लत नहीं—सिगरेट तक तो वह पीता नहीं। गर्ज ये कि फिजूलखर्ची का पट्टा पत्नी के गले बंधता है। पति बेदाग निकल जाता है।



दृश्य नम्बर दो में फिजूलखर्ची के बहाने कुछ यों बनते हैं। मार्च की तनख्वाह मिली है—सारे साल इन्कमटैक्स की तरफ कुछ अधिक पैसा कट गया था सो अब 'एडजस्ट' किया गया और १०-१५ रुपए वापस मिल गये। इन ज्यादा मिले, अचानक मिले रुपयों की कमाई इतनी आयी कि पचास पल्ले से निकलकर उनके साथ भस्म हो गये। शहर में नुमायश लगी है। एक अजीब-सा बेतुका फूलदान पत्नी को भा गया। उन्हें लगा कि इसमें केक्टस और सूखी टहनियां सजाकर अद्भुत इकेबाना निर्मित हो सकता है। पति ने कहा—

'छोड़ो, क्यों फिजूलखर्च किया जाय। अपने घर में बहुतेरे फूलदान हैं। उन्हीं में कहां हमें फूल सजाने को मिलते हैं?'

पत्नी तुनक गयी, 'तभी तो कह रही हूं—ये ले लो। इसमें फूलों की जरूरत ही नहीं। और भई—मैं तो थक गयी—फूंक-फूंककर कदम रखती हुई।

दोनों जी तोड़ मेहनत करके कमाते हैं—क्या जरा-सी फिजूलखर्ची भी नहीं कर सकते?'

अब बताइए-इस साफ़-गो तर्क का जवाब दिया जा सकता है?

तीसरे कोण में, एक दूसरे की सहूलियत का ध्यान रखने में, अपना प्यार और हृदयता जताने में भी खूब पैसा बहाया जाता है। दूसरे के लिए धन का व्यय न अपव्यय लगता है और न उसमें किसी प्रकार की अपराध-भावना जागती है। झिझक सबसे अधिक अपने खर्च करने में आती है। जब दूसरे पर खर्च किया जाता है, तब अप्रत्यक्ष रूप से हम दूसरे को स्वयं पर खर्च करने का आमंत्रण देते हैं—इस गहराई में कोई नहीं जाता। फलतः एक ऐसा चक्कर चलता है जो धीरे-धीरे अपने बस से बाहर हो जाता है।

वैसे, फिजूलखर्ची है क्या? यों तो कहा जा सकता है कि जिन वस्तुओं के बिना जिया न जा सके, उन्हें छोड़कर हर किसी वस्तु पर पैसा लगाना व्यर्थ का खर्च बढ़ाना है। इस परिभाषा को मान लें तो त्यागी तपस्वियों के अतिरिक्त हर व्यक्ति फिजूलखर्च सिद्ध हो जाय। लेकिन परिभाषा को और थोड़ा लचीला बनायें तो कहा जा

→

सकता है कि आराम से जीने के लिए जो चाहिए, उसे जुटाना फिजूलखर्ची में न गिना जाय ।

अब प्रश्न उठता है कि आराम से जीना क्या है ? हाथ से पंखा झलने से ज्यादा आराम बिजली के पंखे में है । उससे भी ज्यादा आराम कमरों को वातानुकूलित करके बैठने में है । उससे भी उत्तम वह है कि गर्मी का पूरा मौसम पहाड़ पर बिताया जाए । दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता जैसे ताबड़तोड़ आबादी वाले शहरों में बसों के घण्टों इन्तजार की जगह गाड़ी रख लेना और उसे सारे दिन शहर के विपरीत छोर मिलाते, बच्चों को स्कूल लाते ले जाते, सब्जी-भाजी खरीदते, आटा पिसवाते और नौकरी बजाते घूमना, आराम-तलबी के निमित की गयी फिजूलखर्ची कहीं जायेगी या सार्वजनिक परिवहन के राक्षस से छुटकारा पाने की अपेक्षाकृत अक्लमन्दाना इलाज ?

अक्सर हमारी आपकी आवश्यकताओं में भी अन्तर होता है । पच्चीस साल पहले सैंकड़ों के जेवरगढ़ाना वयस्कता की निशानी थी—किसी पार्क में खड़े-खड़े आइसक्रीम पर पांच-सात रुपये उड़ा देना बेवकूफी ! युद्ध, विज्ञान और अस्थिरता के इस युग में अच्छा खाना-पहनना, मौज उड़ाना बुद्धिमानी है—साम्यवाद और समानतावादी युग में जेवर और मकान गढ़ना अदूरदर्शिता और अपने पर जबरन लादी हुई यंत्रणा है ।

आने वाले कल की पीढ़ी इतनी क्षणवादी होने के लक्षण दिखा रही है कि वह अच्छे खाने-पीने पहनने में भी रुचि नहीं रखती । वह रेडियो, टेलीविजन, रेशम, टैरीलीन, भव्य होटल तथा विलास के तमाम परिचित उपकरणों को नकारकर फूल सूंघती हुई चरस, गांजे और मारुआना के नशे में झूमकर अजब ढंग से वीतरागी हो जाना चाहती है । उसके लिए बच्चों को बढ़िया शिक्षा देना और संभ्रान्त व सभ्य दिखने के लिए करने वाले सब व्यय व्यर्थ हैं, अपव्यय हैं ।

ऐसी स्थिति में कौन यह निर्णय कर सकता है कि यह वस्तु जरूरी है, या नहीं ? गांधीजी ने देश की गरीबी की ओर सबका ध्यान खींचते हुए कहा था कि जब तक देशवासियों की यह दशा है, अपने घर पर एक पैसा भी फिजूलखर्च करना अपराध है । यानी फिजूलखर्ची काफी हद तक परिवेश से तय होती है ।

इससे भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि मनुष्य की इच्छाएं उससे जितना संचय कराती हैं, उसके कष्ट, उसकी परेशानियां भी उतनी बढ़ती जाती हैं । कबीर की तरह घर जलाकर, लुकुटी हाथ लिये चौराहे पर निकल आने को नहीं कहती, किन्तु इतना तो किया ही जा सकता है कि घर के सामान की लिस्ट बनायी जाय और उसे खरीदने तक कम-से-कम तीन बार देखभाल लिया जाय और जो बेहद जरूरी न जान पड़ें, उसे लिस्ट से काटते जायं ।

वैसे, आपने यह भी सोचा कि कहीं आप चार पैसे बचाने के चक्कर में बहुमूल्य खुद को तो फिजूल नहीं खर्चे डाल रहे ? न भूलें कि अक्सर समय धन से अधिक मूल्यवान होता है । इस बेरहम जिन्दगी में शक्ति का अपव्यय धन के अपव्यय से ज्यादा घातक सिद्ध होता है । किसी के होंठों पर आयी कृतज्ञता और आनन्द की एक मुस्कान पर सैंकड़ों कागज या धातु के टुकड़े लुटाना अधिक सार्थक है, क्योंकि आप कुछ भी कह लें पैसा है हाथ का मैल ही ।

परिणाम

गेंद ढूंढ़ो प्रतियोगिता

विजेता: होतचंद, सिनेमा बुक डिपो, प्लाजा रोड, अजमेर





गुमनाम न० 26 अंक न० 1. का परिणाम

कलाकार का नाम मनोज

दीवानी बात:

कभी सन्यासी कभी दस नम्बरी
यह भी कल की बात जब मैं
लाऊं क्रांति तब लोगे मुझे पहचान

विजेता: बलजिन्द्र सिंह (बिहार)

"प्रेमनाथ क्या संकल्प ले" प्रतियोगिता का हल

"प्रेमनाथ को यह संकल्प लेना चाहिये कि वह सोमरस व सुन्दरियों को त्याग कर नशाबन्दी प्रचार शुरू करें।

विजेता: महेन्द्र कुमार जैन
ग्वालियर म. प्र.

चना कुरमुरा

पत्नी— तुम तो कभी प्यार की बातें नहीं करते ।

पति—क्या कहा ? हाँ,...... देखो, कैसी प्यारी प्यारी हवा चल रही है ।

●

पत्नी अपने मैके जा रही थी । पति ने कहा— 'जब तुम्हें आना हो तो यहाँ पहले से तार दे देना ।'

पत्नी— 'अच्छा कितने रुपये के लिये तार भेजूं, यह भी तो बतला दीजिए ?'

●

पति— मैं तुम्हारी वर्षगाँठ के अवसर पर तुम्हें उपहार देने के लिए यह मोतियों की माला लाया हूं ।

पत्नी— मगर मैंने तो मोटर के लिये कहा था ।

पति— हाँ, कहा तो था । पर क्या करूं बाजार भर में कहीं नकली मोटर मिली ही नहीं ।



तमन्ना और रेहाना फिल्म नवाब साहब में



बिंदिया फिल्म दुनियाद

फिल्मी चित्र



जितेन्द्र, नीतू व राकेश रोशन फिल्म प्रियतमा में

अमजद खान व शत्रुघ्न सिन्हा फिल्म आत्मार







...मनवानी, प्लाट ... सुभाष मार्ग, सी- ...र, (राज०), १८ ...र देखना, फिल्मी ...ाना।



दीपक कुमार, अपर चुटिया, रांची, १८ वर्ष, पेन-फ्रेन्ड बनाना, फाइटिंग करना, पिक्चर देखना, दीवाना पढ़ना व हंसना और हंसाना।



अनुराग प्राशर, अम्बा भवन, सुल्तानपुर, जि० कुल्लू, १४ वर्ष, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट व लूडो खेलना, घूमना तथा डाक टिकट संग्रह करना।



सुनील सिंह, चर्च कम्पाऊंड, प्रतापगढ़, (उ. प्र.), १८ वर्ष, गिटार बजाना, विदेश घूमना, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना।



अश्विनी कुमार कक्कड़, रेलवे रोड, मंडीनाथूका १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, बहुत तेज साइकिल चलाना तथा फिल्में देखना।



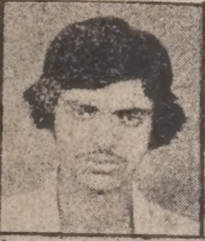
अशोक दिगंबर राव बडवे, पो. बॉ. ३२४४ अ.बूधाबी, यू. ए. ई., २४ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, ड्राइविंग करना, इलैक्ट्रिक का काम करना।



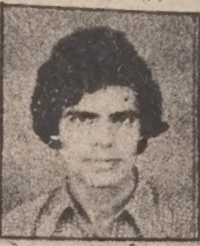
हरगोबिन्द लालवानी, ३२/ए, वाडज (अहमदाबाद), आश्रम नगर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दूसरों का भला करना व प्रेम भाव करना।



...मार सिंह द्वारा ...अधिकारी मुरादा- ...र्ष, फिल्में देखना, ...ा, दीवाना पढ़ना, ...करना।



चेत चन्द्र वर्मा, 'राजू' कुम्हार बाड़ा, क्लोथ कम्पनी, रमना रोड, गया, १६ वर्ष, कमजोर लड़कों की मदद करना, देश सेवा करना।



महेन्द्र सुराणा ४४, जी. एम. एस. स्ट्रीट मद्रास-१, २१ वर्ष, दीवाना का दीवाना, लड़के-लड़कियों से पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना।



अशोक कुमार गिरि, श्रम अधीक्षक कार्यालय हजारीबाग, १६ वर्ष, साहित्यकार बनना, घूमना, पत्र-मित्रता करना, पत्रिकायें पढ़ना।



रवि रंजन द्वारा श्री बी. एन. सहाय, उप-निदेशक चकबन्दी, सासाराम, जिला रोहतास, बिहार, १३ वर्ष, जीवन में आगे ही आगे बढ़ना।



कुमार सुशील द्वारा विद्युत वितरण खंड, चन्दौसी, मुरादाबाद (यू. पी.), २० वर्ष, अच्छा साहित्य पढ़ना, अच्छी पिक्चरें देखना।



राकेश जिन्दल, एन.के. जिंदल क्वा. नं० ८७६, रोड नं० १०, न्यू रेलवे कालोनी, रतलाम, १४ वर्ष, क्रिकेट खेलना, फोटो संग्रह करना।



...गुप्ता, ३८/११, ...दिल्ली-७, १८ ...ाना, देश-विदेश ...वाना पढ़ना, पत्र- ...ा।



कृष्ण कुमार मलहोत्रा, ४६, जी ब्लाक, श्रीगंगानगर १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना, स्कूटर चलाना, डाक टिकट एकत्रित करना।



आनन्द प्रकाश द्वारा सुभाष चन्द्र म० नं० ३२५०/३३-डी चण्डीगढ़ १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, फरमाईश भेजना।



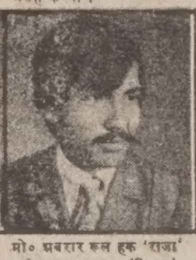
भैरव प्रसाद सिंह, खबसी, सारण (बिहार), २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना तथा पत्र-पत्रिकायें पढ़ना, हंसना और हंसाना।



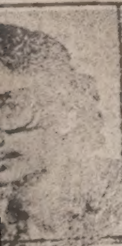
सुरेश शर्मा गांव व पोस्ट करावरा मानकपुर महेन्द्रगढ़, १८ वर्ष, लोगों की सेवा करना, दीवाना पढ़ना तथा नाटक करना, पत्र-मित्रता करना।



महबूब आलम, गलशहीद पक्काबाग निकट पुलिस चौकी, १५ वर्ष, कबूतर बाजी करना तथा पत्र-मित्रता करना और दीवाना पढ़ना।



मो० अबरार रूल हक 'राजा' वासेपुर, धनबाद, (बिहार), १६ वर्ष, अपने प्रेमिका रेहाना की याद में खोए रहना, बैडमिन्टन खेलना।



...र दहन, WZ-३४ ...ाइंन, नई दिल्ली, ...टिकट संग्रह करना, ...करना, फरमाईश ...वाना पढ़ना।



इकबाल सिंह भाटिया द्वारा स्काईलैंड रेडियो लिस्नर्स क्लब, मेन बाजार, जीन्द, २० वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, फरमाईश भेजना।



वासुदेव शर्मा, केसर देव जी शर्मा, पो० सालासर, जिला चुरू, (राज०), दीवाना पढ़ना, बड़ों का कहना करना और दूर-दूर तक घूमना-फिरना।



विजय कुमार अजमानी, लाइफ इन्शोरेन्स बिल्डिंग के पास, दयालनन्द बिलासपुर, म. प्र., १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, नई फिल्में देखना।



करण सिंह चौहान हितेन्द्र बुक स्टाल, पलासिया थाने के पास, इन्दौर, २२ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना, घूमना व पत्र-मित्रता करना।



रवीन्द्र कुमार पुनियानी द्वारा श्री सी. एल. पुनियानी, सेंट्रल वर्कशाप, हजारीबाग (बिहार), १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना।



राजेन्द्र मोतीलाल गिनोडे, गांधीनगर चिरवली, जिला बुलढाना, १७ वर्ष, स्टेप कलेक्शन, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



...ल शर्मा द्वारा राजेन्द्र ...र्मा, रोहतक रोड, ...रियाणा), १६ वर्ष, ...व क्रिकेट सहित ...घूमना-फिरना।



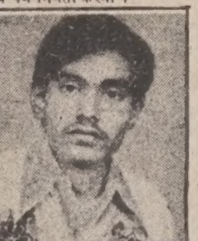
बरिन्द्र चावला, १६ मार्केट ब्लाक, नमल टाउनशिप, ... वर्ष, पत्र-मित्रता करना, -बिरजा लेकर दोस्त ढूंढना, कमेंट्री सुनना।



मदन लाल जुनेजा, श्यामजी मेडिकल हाल, हजारी बाग, रोड, (झरिया), १५ वर्ष, छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा होना, दीवाना पढ़ना।



किशोर सिंह 'सोलंकी' धौला चौतरा, पाली मारवाड़, राज. १६ वर्ष, पुस्तकें तथा दीवाना पढ़ना, फुटबाल खेलना, पत्र-मित्रता करना।



मो० इब्राहीम, ८६७३, नया मोहल्ला, पुलबंगश, दिल्ली, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना तथा फिल्में देखना, गाना गाना, हंसना व हंसाना।

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ____________

पता ____________

आयु ________ शौक ________

...ना बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए धन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

६ फरवरी से १२ फरवरी ७८ तक

मेष : इस सप्ताह को विशेष अच्छा तो नहीं कहा जा सकता परन्तु यदि आप सूझबूझ से काम लें तो अवश्य ही अच्छा लाभ प्राप्त किया जा सकता है, घर परिवार की समस्याओं से परेशानी रहेगी ।

वृष : इस सप्ताह में भी प्रायः हालात पहले समान ही चलेंगे, सुधार एवं लाभ की योजनाएं सामने तो आवेंगी परन्तु आप किसी कारणवश उन पर अमल न कर सकेंगे, आर्थिक तंगी खटकती रहेगी ।

मिथुन : परिश्रम एवं लगन से काम करने पर आप इस सप्ताह के दौरान उचित फल प्राप्त कर सकते हैं, भाग्य आपके साथ है, प्रयत्न करने पर सफलता प्राप्त होती रहेगी, और लाभ भी अच्छा होगा ।

कर्क : कोई नई चिन्ता पैदा होगी जिसके कारण मानसिक एवं शारीरक दुर्बलता भी महसूस होती रहेगी, फिर भी यह सप्ताह आपके लिए अच्छा ही रहेगा, बार-बार प्रयत्न करने पर काम बन जायेगा ।

सिंह : पिछले सप्ताह की तुलना में यह सप्ताह कुछ अच्छा रहेगा, गम्भीर समस्याएं धीरे-धीरे सुलझने लगेंगी और चिन्ता भी कुछ कम होती जावेगी, परिश्रम करने पर भाग्य आपका साथ देगा ।

कन्या : किसी प्रियजन की ओर से कोई विशेष या सुसमाचार भी मिल सकता है, मेहमानों के स्वागत आदि पर आप विशेष व्यय करेंगे, मनोरंजन आदि का कार्यक्रम बनेगा और समय भी अच्छा व्यतीत होगा ।

तुला : यह सप्ताह आपकी आशाओं के विपरीत चलता दिखाई देगा, आप कारोबार में अधिक ध्यान लगाना चाहेंगे परन्तु घरेलू झंझटों या व्यर्थ के झगड़ों के कारण दैनिक योजनाओं में विघ्न पड़ेगा ।

वृश्चिक : इन दिनों शुभ-अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, घरेलू एव व्यापारिक जीवन को ठीक स्तर पर लाने के लिए आपको संघर्ष भी काफी करना होगा, शत्रु दबे रहेंगे, यात्रा की प्रबल आशा है ।

धनु : इस सप्ताह के दौरान आप स्वयं ही अपने लिए कठिनाइयां पैदा करते रहेंगे, फिर भी यह पर्याप्त अच्छा रहेगा और आपका आत्मविश्वास और बढ़ जावेगा, संकट एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा ।

मकर : इन दिनों कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी और परिश्रम भी काफी करना होगा, छोटी छोटी चिन्ताओं से परेशानी ज्यादा रहेगी, कोई अधूरा या बिगड़ा काम बन जाने की आशा है ।

कुम्भ : इस सप्ताह के दौरान आप व्यर्थ के झंझटों में फंसे रहेंगे, नातेदारों की ओर से भी परेशानी बन सकती है, आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी, स्त्री पक्ष से कुछ चिन्ता बनी रहेगी ।

मीन : शुभ-अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे, परिश्रम भी काफी करना पड़ेगा, कभी आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत तो किसी समय तंगी महसूस होती रहेगी, परिवार से शुभ सहयोग मिलेगा ।

पग-पग आगे बढ़ती नवोदित अभिनेत्री

तमन्ना

—विजय भारद्वाज

'यही है जिन्दगी' में छोटा-सा रोल निभाने वाली खूबसूरत अभिनेत्री तमन्ना फिल्म दर्शकों को बेहद पसन्द आई । जिस बखूबी से इन्होंने वह रोल निभाया वह वास्तव में तारीफ के काबिल है । इकहरे बदन की कमसिन व कामिनी तमन्ना आज फिल्म उद्योग में बेहद व्यस्त हैं । 'यही है जिन्दगी' की सफलता के बाद इन्हें लगातार एक के बाद एक फिल्म कान्ट्रेक्ट मिल रहे हैं ।

फिल्मों में प्रवेश करने के पहले यह स्टेज आर्टिस्ट थीं । यह दिल्ली की रहने वाली हैं । अपने परिवार से इजाजत लेकर इन्होंने फिल्म उद्योग में कदम रखा और एक लम्बे समय तक फिल्मों में प्रवेश के लिये संघर्ष किया । अधिकतर नवोदित कलाकारों को फिल्मों में रोल प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है, उसी तरह इनको भी मेहनत करनी पड़ी । इनकी शीघ्र आने वाली फिल्म है 'अली बाबा मरजीना' और उसके बाद वाली फिल्में हैं 'नवाब साहब' व 'आग के फूल' । फिल्म नवाब साहब के सेट पर तमन्ना से मुलाकात हुई तो पूछ लिया ? 'क्या आप भी फिल्मों में रोल प[...] के लिये सब कुछ करने को तैयार रहती[...] जैसे केटी मिर्जा, सीमा कपूर, रेहाना[...] राधा सलूजा तैयार रहती हैं । मेरा मत[...] अश्लील दृश्यों से है ।'

'भिखारियों को कोई चीज चुनने [...] अधिकार नहीं होता, हर नया कलाक[...] भिखारी के समान रोल पाने को लालायि[...] रहता है और वह वही रोल पा लेता है [...] उसे निर्माता निर्देशक बख्शीस में दे देता [...] हां ! सफल होने के बाद वही कलाक[...] अपनी एक अलग इमेज बनाने की कोशि[...] करता है । लेकिन मैं अश्लीलता के पक्ष[...] कतई नहीं हूं और ऐसे रोल स्वीकार न[...] करती जिसमें कला के नाम पर 'नग्न[...] अधिक हो,' तमन्ना ने अपना पक्ष स्प[...] करते हुए कहा ।

'आप किस कलाकार की सबसे ज्या[...] इज्जत करती है ?'

'तमन्ना ने बिना सोचे समझे तपाक[...] मुस्कराते हुए जवाब दिया ।

'धर्मेन्द्र की । मैं उनकी शुरू से 'फै[...] रही हूं और अब भी हूं जो बात उनमें [...] किसी में नहीं ।'

बैडमिन्टन खेलने के अलावा इ[...] योगाभ्यास का भी शौक है दीवाना की न[...] तब भी दीवानी थीं जब दिल्ली में थीं औ[...] आज भी दीवानी हैं ।

बिन्दु, फिल्म 'हीरा मोती' में

